सुविचार

जिंदगी अगर अपने हिसाब से जीनी हैं तो कभी किसी के फैन मत बनो।

Daily

THE PHOTON NEWS

सच के हक में...

Published from Ranchi

Ranchi ● Friday, 07 July 2023 ● Year : 01 ● Issue : 171 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com

E-Paper : epaper.thephotonnews.com

काजोल को काम करने के लिए सास ने किया...

SHARE

सेंसेक्स	:	65,785.64
निफ्टी	:	19,497.30

SARAFA

सोना	:	5,560
चांदी	:	76.07

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

दो आईपीएस को मिली डीआईजी रैंक में प्रोन्नति

RANCHI : झारखंड कैडर के 2009 बैच के दो आईपीएस इंद्रजीत महथा और संजय रंजन सिंह को डीआईजी रैंक में प्रोन्नति दी गई है। जारी अधिसूचना के अनुसार इंद्रजीत महथा को डीआईजी रैंक में प्रोन्नति प्रदान करते हुए अगले आदेश तक डीआईजी एसटीएफ झारखंड के पद पर पदस्थापित किया गया है। जबकि संजय रंजन सिंह को डीआईजी रैंक में प्रोन्नति देते हुए डीआईजी झारखंड पुलिस अकादमी हजारीबाग के पद पर पदस्थापित किया गया है। इस संबंध में गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने बुधवार रात अधिसूचना जारी की है। दूसरी ओर, 2009 बैच के ही आईपीएस संजीव कुमार को डीआईजी रैंक में प्रोन्नति नहीं दी गई। संजीव कुमार वर्तमान में धनबाद एसएसपी के पद पर पदस्थापित हैं।

लोहरदगा में हथियार के साथ चार उग्रवादी गिरफ्तार

LOHARDAGA : सेन्हा थानाक्षेत्र में प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन के चार उग्रवादियों को पांच हथियार के साथ पुलिस ने गिरफ्तार किया है। बताया जाता है कि ये उग्रवादी किसी बडी घटना को अंजाम देने की रणनीति बना रहे थे और पुलिस को इसकी भनक लग गई। पुलिस इनसे पूछताछ कर रही है।

भारत सरकार के संयुक्त सचिव सात को आयेंगे लोहरदगा

LOHARDAGA : आकांक्षी जिला अंतर्गत लोहरदगा जिला के केंद्रीय प्रभारी पदाधिकारी कमल किशोर सोन, संयुक्त सचिव, श्रम एवं नियोजन मंत्रालय, भारत सरकार का लोहरदगा जिला का भ्रमण कार्यक्रम सात से नौ जुलाई तक निर्धारित है। संयुक्त सचिव इस दौरान सात जुलाई को जिला परिषद सभागार में 10.30 बजे पूर्वाह्न से जिला के संबंधित विभागों के पदाधिकारियों के साथ बैठक करेंगे।

असिस्टेंट प्रोफेसर बनने के लिए अब PHD जरूरी नहीं यूजीसी ने बदले नियम

RANCHI : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शिक्षकों और अन्य शैक्षणिक कर्मचारियों की नियुक्ति के लिए न्यूनतम योग्यता और उच्च शिक्षा में बदलाव किया है। यूजीसी द्वारा लिया गया निर्णय 1 जुलाई 2023 से लागू होगा। असिस्टेंट प्रोफेसर की भर्ती योग्यता में पीएचडी की अनिवार्यता को खत्म कर दिया गया है। नेट, सेट और स्लेट क्वालिफाइड अभ्यर्थी सहायक अध्यापक के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसे लेकर यूजीसी के अध्यक्ष ने ट्वीट किया है।

कारोबारी कृष्णा साहा से राज उगलवाने में जुटा ED

पांच दिनों की मिली रिमांड, आज से होगी पूछताछ

CRIME REPORTER RANCHI : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अवैध खनन और मनी लॉउंड्रिंग मामले के आरोपी साहिबगंज के पत्थर कारोबारी कृष्णा कुमार साहा को गुरुवार को पीएमएलए कोर्ट में पेश किया। इस दौरान कोर्ट ने सात दिनों की रिमांड मांगी, लेकिन कोर्ट ने पांच दिनों की रिमांड की अनुमति दी है। इसके बाद कोर्ट ने गिरफ्तार कृष्णा साहा को जेल भेज दिया। ईडी शुक्रवार से कृष्णा से पूछताछ करेगी। बता दें कि बुधवार पांच जुलाई, 2023 को ईडी ने दिन भर पूछताछ के बाद रात में कृष्णा को गिरफ्तार किया था। गुरुवार को ईडी ने प्रभात कुमार शर्मा की विशेष कोर्ट में पत्थर कारोबारी कृष्णा साहा को पेश करते हुए सात दिनों की रिमांड मांगी थी। जिस पर कोर्ट ने पांच दिनों की अनुमति दी।

पंकज मिश्रा को दिए 30 लाख, खाते में भी पैसे भेजे

साहेबंगज में अवैध खनन की जांच कर रही प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की अब तक की जांच में यह बात सामने आई है कि बुधवार को जिस खनन व्यवसायी कृष्ण कुमार साहा को ईडी ने गिरफ्तार किया है, उसने करोड़ों रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग की है। अवैध खनन के जरिये करोड़ों की काली कमाई करने के आरोपी पंकज मिश्रा और कृष्ण कुमार साहा का डायरेक्ट कनेक्शन है। कृष्ण साहा ने पंकज मिश्रा को 25 लाख रुपये से ज्यादा नकद दिए और 10 लाख रुपये पंकज मिश्रा के अकाउंट में ट्रांसफर किये।

प्रेमिका से वीडियो कॉल पर बात करते प्रेमी ने फंदे से लटककर दे दी जान

JAMTARA : दो बच्चों के पिता महेंद्र मंडल ने प्रेम प्रसंग में फंदे से लटक कर आत्महत्या कर ली। फंदे लगाने से पहले वह तकरीबन ढाई घंटे तक अपनी प्रेमिका के साथ वीडियो काल कर बात करता रहा। फिर इसी बीच फंदा लगाकर उसने आत्महत्या कर ली। उसके घरवालों के अनुसार फंदे से उतारने के दौरान भी उसके कान में हेड फोन लगा हुआ था। घटना जामताड़ा राजबाड़ी मोहल्ले में बुधवार की देर रात हुई। वह मूलतः गिरिडीह जिले के अहिल्यापुर थाना क्षेत्र के रसनजोरी गांव का रहने वाला था। वह यहां अपने परिवार के साथ वह किराये के मकान में रहता था और मुर्गा बेचने का व्यवसाय कर अपने परिवार का भरण पोषण करता था। घटना की सूचना पाकर गुरुवार को मौके पर पहुंची जामताड़ा पुलिस ने शव को अपनी कस्टडी में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के भाई जामुन मंडल के बयान पर केस दर्ज करने के बाद पुलिस मामले की पड़ताल कर रही है। महेंद्र के पड़ोसियों के अनुसार वह काफी समय से अपने गांव के क्षेत्र में रहने वाली किसी लड़की के साथ बातचीत करता रहता था। इस बीच दो बच्चों का पिता होने के बावजूद उसके प्रेम प्रसंग की जानकारी उसकी पत्नी शांति देवी को लग चुकी थी।

खालिस्तान के मुद्दे पर भारत ने CANADA को दिखाया रौद्र रूप

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गलत तरीके से किया जा रहा इस्तेमाल

AGENCY, NEW DELHI : भारत ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर खालिस्तानी समर्थकों द्वारा कनाडा, अमेरिका व अन्य देशों में हिंसा और अलगाववाद को जायज ठहराने की कड़े शब्दों में निंदा की है। भारत ने कहा है कि भारतीय राजनयिकों और परिसरों की सुरक्षा स्थानीय सरकार की जिम्मेदारी है और इसके लिए हम हमेशा दबाव बनाते रहेंगे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने गुरुवार को साप्ताहिक पत्रकार वार्ता में कनाडा में भारतीय राजनयिकों के खिलाफ हिंसा का समर्थन करने वाले पोस्टर से जुड़े सवालों का जवाब देते हुए उक्त बातें कहीं। साथ ही उनसे कनाडा के प्रधानमंत्री के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता वाले बयान पर भी सवाल पूछा गया था। प्रवक्ता ने कहा कि भारतीय राजनयिकों और राजनीतिक परिसरों के खिलाफ लगे पोस्टर पूरी तरह से स्वीकार है और हम इसकी कड़े शब्दों में निंदा करते हैं। हमने इस संबंध में कनाडा सरकार से मजबूती के साथ यह विषय उठाया है। उन्होंने कहा कि यह चिंताजनक है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को गलत तरीके से इस्तेमाल किया जा रहा है। इसकी आड़ में हिंसा अलगाववाद और आतंकवाद को बैठाने की कोशिश की जा रही है। हम इस संबंध में संबंधित सरकारों पर दबाव बनाते रहेंगे कि वह ऐसे तत्वों के खिलाफ कार्रवाई करें और भारतीय राजनयिकों और परिसरों को सुरक्षा प्रदान करें। उन्होंने कहा कि हमने अमेरिका ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन में भी इस तरह के इंसा का समर्थन करने वाले पोस्टरों को देखा है।

कांग्रेस ने कन्हैया कुमार को सौंपी NSUI की कमान

देशद्रोही नारों के मामले से मिली थी पहचान

AGENCY NEW DELHI : कांग्रेस ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार को भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) का प्रभारी नियुक्त किया है। पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल की ओर से जारी बयान के मुताबिक, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कन्हैया को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का प्रभारी नियुक्त किया। इससे पहले, रूचि गुप्ता एनएसयूआई की प्रभारी थी जिन्होंने करीब ढाई साल पहले पद से इस्तीफा दे दिया था। जानकारी के लिए बता दें कन्हैया कुमार साल 2021 के सितम्बर महीने में कांग्रेस से जुड़े थे। कन्हैया को साल 2016 में जेएनयू में अफजल गुरु की बरसी पर आयोजित एक प्रोग्राम के दौरान कथित रूप से लगे देशद्रोही नारों के मामले में तीन छात्रों को आरोपी बताया गया था उनमें से एक कन्हैया कुमार भी थे। इस मामले में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार भी कर लिया था लेकिन, बाद में कन्हैया को जमानत पर रिहा कर दिया गया था। इस मामले के बाद से ही कन्हैया को पहचान मिली थी। बता दें साल 2015 में कन्हैया को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष के पद के लिए चुना गया था।

कन्हैया कुमार की फाइल फोटो।

पुलिस हिरासत में मौत मामले में 5 लाख का मुआवजा देने का निर्देश

HC ने मामले में शामिल पुलिस अफसरों पर कार्रवाई का दिया आदेश

SPECIAL REPORTER RANCHI : झारखंड हाईकोर्ट ने 2015 में पुलिस हिरासत में मारे गये उमेश सिंह की पत्नी को 5 लाख का मुआवजा देने का निर्देश दिया है। साथ ही अदालत ने राज्य सरकार को इस मामले में शामिल पुलिस अधिकारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई करने का आदेश दिया है। हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजय कुमार द्विवेदी ने अपने आदेश में कहा कि यह पुलिस की बर्बरता का साबित मामला है। उन्होंने सवाल किया कि पुलिस विभाग ने दोषी पुलिस अधिकारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई क्यों नहीं की।

जून 2015 में उमेश सिंह को पुलिस ने हिरासत में लिया था

अदालत ने आदर्श जारी होने के छह सप्ताह के अंदर मृतक उमेश सिंह के परिजनों को मुआवजा राशि देने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने इस मामले में दोषी पाये जाने वाले पुलिस अधिकारियों से राशि वसूलने को कहा है। इस संबंध में

उमेश सिंह की पत्नी बबीता देवी ने याचिका दायर की थी। बबीता देवी के वकील मो. शादाब अंसारी ने अदालत को बताया कि घनुडीह ओपी के प्रभारी हरिनारायण राम के निर्देश पर घनुडीह चौकी के मुंशी पवन सिंह ने जून 2015 में उमेश सिंह को हिरासत में ले लिया था। जब उमेश सिंह अगली सुबह घर नहीं लौटे, तो उनके परिवार ने उनकी तलाश की और घनुआडीह जोरिया के पास उनका शव पाया। अदालत को वकील ने बताया कि उमेश सिंह के शरीर पर कई चोटें थीं और उन्होंने केवल अंडरगारमेंट पहने हुए थे। आगे यह भी कहा गया कि मृतक की शर्ट पुलिस स्टेशन के लॉकअप में मिली थी। जैसा कि परिवार ने एक वीडियो रिकॉर्डिंग में पुष्टि की थी। अदालत को बताया गया कि बबीता देवी ने झरिया पुलिस स्टेशन में हरिनारायण राम, पवन सिंह, सतेंद्र कुमार और अज्ञात पुलिस अधिकारियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की। लेकिन जांच अधिकारी ने डेढ़ साल से अधिक समय तक याचिकाकताओं के बयान दर्ज नहीं किये। राज्य सरकार ने इस मामले की जांच सीआईडी से करवाई थी। लेकिन सीआईडी ने पुलिस अधिकारियों को दोषमुक्त कर दिया। बता दें कि मो० शादाब अंसारी इस केस को लड़ने के लिए फीस नहीं ली है।

समलैंगिक कपल को सुरक्षा मुहैया कराने का बांबे हाईकोर्ट का आदेश

MUMBAI : बांबे हाई कोर्ट ने समलैंगिक मामले में एक ऐतिहासिक फैसला लिया है। कोर्ट ने बताया जब बात समलैंगिक संबंधों की हो तो थोड़ी संवेदनशीलता दिखाई जाए। एक जोड़े के उनके परिवार के कहने पर बुरा व्यवहार न करें। कोर्ट ने एक समलैंगिक जोड़े को पुलिस प्रोटेक्शन प्रदान करने का निर्देश दिया है। जस्टिस रेवती मोहिते डेरे और जस्टिस गौरी गोडसे की पीठ ने महाराष्ट्र पुलिस को यह निर्देश दिया है। मुंबई में रहने वाले इस समलैंगिक जोड़े की उम्र 28 और 32 वर्ष है। जानकारी के मुताबिक साल 2020 में वे एक सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म पर मिले थे। इनमें से एक का घर बिहार और दुसरे का घर सोलापुर में है। दोनों ही एक साथ फरार हुए थे और पुणे में रह रहे थे। दोनों ही अपने घरों से भागकर पुणे में रहने लगे। जानकारी के मुताबिक 28 वर्षीय लड़की के परिवार ने कई बार उसे जबरदस्ती घर ले जाने की कोशिश की जिसके बाद डर के मारे उन्हें भागकर कर्नाटक जाना पड़ा। यहां उन्होंने पुलिस स्टेशन में शिकायत भी दर्ज कराई।

रांची व आसपास के जिलों में तेज बारिश को लेकर यलो अलर्ट

RANCHI : पूरे राज्य में मानसून सक्रिय हो चुका है। गुरुवार को राजधानी रांची समेत आसपास के जिलों में हुई झमाझम वर्षा के बाद मौसम सुहावना हो गया। जिले के किसानों ने भी राहत की सांस ली है। दरअसल पिछले कुछ दिनों तक हुए वर्षापात सामान्य से कम बताया गया जबकि गुरुवार को हुई तेज वर्षा ने किसानी को राहत दी है। वहीं दूसरी ओर वर्षा के बाद सड़कों पर जलजमाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। मौसम विज्ञान केंद्र रांची के अनुसार अगले एक सप्ताह तक मानसून सक्रिय रहेगा। इस दौरान जमकर वर्षा होने का अनुमान लगाया गया है, यही वर्षा खेती के लिहाज से अच्छी होगी और खरीफ फसलों को काफी लाभ मिलेगा। आंकड़ों की माने तो अब तक पूरे राज्य में सामान्य से 38 प्रतिशत कम वर्षा हुई है। मौसम विभाग केंद्र रांची के वरीय विज्ञानी अभिषेक आनंद के अनुसार 7 और 8 जुलाई को राज्य के कई हिस्सों में वर्षा होगी। दक्षिणी हिस्से यानी पूर्वी व पश्चिमी सिंहभूम, सिमडेगा, सरायकेला खरसावां और मध्य भाग यानी रांची, रामगढ़, खूंटी, बोकारो, हजारीबाग, गुमला में कहीं कहीं तेज वर्षा को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है।

पश्चिम बंगाल में BJP नेता की हत्या

पंचायत चुनाव से 48 घंटे पहले बीरभूम जिले में शव को रोड पर फेंका

AGENCY KOLKATA : पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव के लिए आठ जुलाई को मतदान होना है। मतदान से महज 48 घंटे पहले बीरभूम जिले में हिंगला ग्राम पंचायत के भाजपा के बूथ उपाध्यक्ष दिलीप म्हारा (48) की हत्या की गई है। उनका शव घर के पास सड़क पर फेंक दिया गया। घटना बुधवार रात की है। भारतीय जनता पार्टी के गुरुवार सुबह जारी बयान में बताया गया है कि बुधवार रात से वह लापता थे। आज सुबह उनका शव सड़क किनारे मिला। उनकी गर्दन में चोट के निशान हैं। उधर, पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बीरभूम के पुलिस अधीक्षक राज नारायण मुखर्जी ने इसकी पुष्टि की है। इसके अलावा मुर्शिदाबाद के बेलडांगा महेशपुर गांव में आज तड़के एक व्यक्ति का लहूलुहान शव घर के पास मिला है। मौके पर बम बांधने सामान मिला है।उसकी पहचान कमाल शेख के तौर पर हुई है। स्थानीय लोगों के मुताबिक वह बम सप्लाई किया करता था। इसी के साथ पंचायत चुनाव में मरने वालों की संख्या बढ़कर 18 हो गई है। मुर्शिदाबाद में कांग्रेस कार्यकर्ता रियाजुल मंडल(55) और अजबार मंडल (55) पर बुधवार रात बम से हमला किया गया है।

कोडरमा में वज्रपात से चंदवारा में बच्चे समेत दो की मौत

KODARMA : चंदवारा थाना अंतर्गत खांडी में गुरुवार शाम वज्रपात से एक बच्चा समेत दो लोगों की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार खाड़ी निवासी जोवल यादव (44) खेत में काम कर रहे थे। इसी दौरान वज्रपात के चपेट में आ गये। वहीं खाड़ी निवासी तीन वर्षीय बच्चा कारू रविदास अपने घर के बाहर खेल रहा था। वह भी वज्रपात के चपेट में आ गया। घटना के बाद परिजनों के द्वारा उक्त दोनों घायलों को सदर अस्पताल लाया गया जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।

पवार ने खुद को बताया NCP अध्यक्ष

भतीजे अजित पवार समेत नौ बागी विधायकों को पार्टी से निकाला

AGENCY, MUMBAI : दिल्ली में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के बाद शरद पवार ने कहा, मैं एनसीपी का अध्यक्ष हूं। उन्होंने अपने भतीजे और महाराष्ट्र के नये डिप्टी सीएम अजित पवार के सारे दावे को खारिज कर दिया है। साथ ही अजित समेत नौ बागी विधायकों को पार्टी से निकालने की घोषना की। उन्होंने अजित पवार के उम्र वाले बयान पर भी तगड़ा जवाब दिया। उन्होंने कहा, चाहे मैं 82 का हो जाऊं या 92 का, मैं अभी भी प्रभावी हूं। शरद पवार ने कहा, यह जो भी कुछ हो रहा है उससे मुझे खुशी है क्योंकि जिन्होंने लोगों को वादा कर उनके वोट हासिल करने के बाद गलत रास्ते पर गए उनको इसकी जबरदस्त कीमत देनी पड़ेगी। राज्य की स्थिति बदलेगी। वहां राष्ट्रवादी कांग्रेस, कांग्रेस और उद्धव ठाकरे की नेतृत्व वाली शिवसेना को महाराष्ट्र की जनता हुकूमत देगी। उन्होंने आगे कहा, मुझे खुशी है कि जिन लोगों को निष्कासित किया, उनको छोड़कर बाकि अन्य लोग इतने कम समय में बैठक के लिए आए। हमारे सभी साथियों की मानसिकता पार्टी को मजबूती से आगे ले जाने की रही।

श्रीहरिकोटा में तैयारियां अंतिम चरण में, 23-24 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर हो सकती लैंडिंग

14 को 2.35 बजे चांद के लिए उड़ेगा चंद्रयान-3

चंद्रयान-3 के स्पेसशिप की यह तस्वीर इसरो की तरफ से जारी की गई है।

AGENCY, NEW DELHI : भारत 14 जुलाई को दोपहर 2.35 बजे आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर से स्पेसशिप चंद्रयान-3 लॉन्च करेगा। इसरो ने यह जानकारी दी है। इसरो चीफ एस सोमनाथ ने बताया कि चंद्रयान 23 या 24 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग की कोशिश करेगा। यान पूरी तरह तैयार है। इसे बुधवार को ही लॉन्चिंग व्हीकल LVM-III में फिट किया गया था। इस मिशन का पूरा बजट 651 करोड़ रुपए का है। अगर चंद्रयान-3 का लैंडर चांद पर उतरने में सफल होता है तो भारत ऐसा करने वाला चौथा देश बन जाएगा। इससे पहले अमेरिका, रूस और चीन चंद्रमा पर अपने स्पेसक्राफ्ट उतार चुके हैं। इस मिशन में भारत चांद की धरती पर एक लैंडर उतारेगा। इस लैंडर में एक रोवर भी है जो चंद्रमा की धरती पर घूमेगा और वहां कुछ प्रयोग करेगा। लैंडर चांद पर एक लूनार दिन तक रहेगा। एक लूनार दिन धरती के 14 दिन के बराबर होता है। चंद्रयान-3 के लैंडर की चांद की सतह पर लैंडिंग के लिए जरूरी है कि वहां सूरज निकला हो। लैंडर के लिए सनलाइट जरूरी है। चांद पर 14-15 दिन सूरज निकलता है और बाकी 14-15 दिन सूरज नहीं निकलता है। चंद्रयान-2 मिशन को 22 जुलाई 2019 को लॉन्च किया गया था। 14 अगस्त को लैंडर और रोवर ने पृथ्वी की कक्षा छोड़ी थी। 6 दिन बाद इसने चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया था। 6 सितंबर को विक्रम लैंडर ऑर्बिटर से अलग हुआ था। मिशन के अनुसार विक्रम लैंडर को चांद के दक्षिणी ध्रुव पर 7 सितंबर को भारतीय समयानुसार रात 1 से 2 बजे के बीच लैंड करना था। यह चांद की सतह से 2.1 किलोमीटर दूर था तभी इसका इसरों से संपर्क टूट गया था। चंद्रयान-2 ने 48 दिन में 30844 लाख किलोमीटर की यात्रा की थी। मिशन पर 978 करोड़ रुपए का खर्च आया था। इसके विक्रम लैंडर से भले निराशा मिली, लेकिन यह मिशन नाकाम नहीं रहा, क्योंकि चंद्रयान-2 का ऑर्बिटर अभी भी चांद की कक्षा में अपना काम कर रहा है।

फ्रांसीसी सैन्य परेड में पंजाब रेजिमेंट के जवान होंगे मार्चिंग दल का हिस्सा

NEW DELHI : पेरिस में 14 जुलाई को होने वाली फ्रांसीसी सैन्य परेड में भारतीय सैन्य दल भी मार्चिंग दल का हिस्सा होगा। फ्रांस में बैस्टिल डे पर समारोह में भारतीय सेना का प्रतिनिधित्व करने के लिए पंजाब रेजिमेंट को चुना गया है। तीन अधिकारियों, चार जेसीओ और 69 सैनिकों वाली ड्रिल टुकड़ी गुरुवार को पेरिस के लिए रवाना हुई। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के निमंत्रण पर प्रधानमंत्री के परेड में सम्मानित अतिथि होंगे। भारतीय वायु सेना के तीन राफेल लड़ाकू जेट बैस्टिल डे पर पेरिस के चैंप्स एलिसीजज के ऊपर फ्लाईपास्ट में उड़ान भरेंगे।

लद्दाख के साथ संपर्क मजबूत कर रही नौसेना

युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ने पर फोकस

AGENCY NEW DELHI : भारतीय नौसेना ने केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के साथ संपर्क मजबूत करने के लिए गुरुवार को दो दिवसीय बहुआयामी आउटरीच कार्यक्रम ह्यजुले लद्दाखह्न (हैलो लद्दाख) शुरू किया है। नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार दोनों दिन लेह में विभिन्न आउटरीच गतिविधियों की मेजबानी करेंगे। नौसेना ने पिछले साल भी उत्तर पूर्व में आउटरीच गतिविधियां की थीं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लद्दाख के बारे में जागरुकता बढ़ाकर वहां के युवाओं और नागरिक समाज को मुख्यधारा से जोड़ना है। नौसेना के कमांडर विवेक मधवाल ने बताया कि भारतीय नौसेना के आउटरीच के हिस्से के रूप में लद्दाख में होने वाले कार्यक्रमों में नौसेना बैंड का सार्वजनिक प्रदर्शन, भारतीय नौसेना और लद्दाख यूटी टीम के बीच एक दोस्ताना फुटबॉल मैच, बाइक और कार अभियान को हरी झंडी दिखाना और विभिन्न स्कूलों का दौरा शामिल होगा।

BRIEF NEWS

केयू के अंगीभूत व संबद्धता प्राप्त डिग्री कॉलेजों में इंटरमीडिएट में नामांकन प्रक्रिया शुरू

CHAIBASA: कोल्हान विवि के अंगीभूत व संबद्धता प्राप्त डिग्री कॉलेजों में इंटरमीडिएट में नामांकन लेने के समस्याएं दूर हो गई। जैक ने 5 जुलाई को पत्र जारी कर असमंजस की स्थिति को दूर कर दिया। अब संबंधित डिग्री कॉलेज इंटर में नामांकन ले सकेंगे। इधर पत्र प्राप्त होते ही विभिन्न डिग्री कॉलेजों में नामांकन लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी। विभिन्न कॉलेजों ने इंटर में नामांकन को लेकर नोटिस जारी दी। शहर के टाटा कॉलेज, महिला कॉलेज व जीसी जैन कॉमर्स कॉलेज में इंटरमीडिएट में नामांकन लेने के लिए विद्यार्थी पहुंचने लगे। इसे विभिन्न कॉलेजों में बैठक बुलाई गई। चूंकि इंटरमीडिएट में नामांकन को लेकर सत्रवार सीट में कटौती की जानी है। इसे लेकर विचार-विमर्श किया गया। विभिन्न कॉलेज प्रबंधनों ने नोटिस जारी कर कहा है कि आईए, आईएससी और आईकॉम सत्र 2023-2025 में नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है। छात्राएं बैंक काउंटर पर चालान जमा करके नामांकन प्रपत्र प्राप्त कर सकते हैं। नामांकन पपत्र के साथ दस्तावेजों भी जमा करें। जिसमें विद्यालय परित्याग प्रमाण पत्र की मूल प्रति, मैट्रिक का एडमिट कार्ड, मार्कशीट, माइग्रेशन, पंजीयन की छायाप्रति, आधार कार्ड की छाया प्रति, जाति तथा आय प्रमाण पत्र की छाया प्रति, बैंक पासबुक की छायाप्रति होना अनिवार्य है। टाटा कॉलेज में कहा गया कि 65 प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का सीधा नामांकन होगा।

भाजपाइयों ने मनायी डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती

CHAIBASA: भारतीय जनता पार्टी ने गुरूवार को स्थानीय परिसदन में डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्म जयंती मनाई। मौके पर मौजूद खूंटी के विधायक नीलकंठ मुंडा समेत भाजपा जिलाध्यक्ष सतीश पुरी समेत प्रदेश, जिला व प्रखंड स्तरीय वरीष्ठ कार्यकताओं ने उनकी तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि डॉ। श्यामा प्रसाद मुखर्जी जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 समाप्त करने के लिए मुखर थे। वह इसके लिए आंदोलनरत थे। उन्होंने इसके लिए एक निशान, एक विधान, एक प्रधान का नारा दिया था। आज मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार के द्वारा जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 को समाप्त किया जा चुका है जो स्वर्गीय डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को दी गई सच्ची श्रद्धांजलि है।

सभी प्राध्यापकों को सोमवार तक अपना एग्रीमेंट पेपर महाविद्यालय के प्राचार्य के माध्यम से भेजने का निर्देश

CHAIBASA: कोल्हान विश्वविद्यालय की ओर से आवश्यकता आधारित सहायक प्राध्यापकों की सेवा अवधि के विस्तार और नवीनीकरण के संबंध में एक अधिसूचना जारी की गई। जिसमें कोल्हान विश्वविद्यालय के अंगीभूत कॉलेजों और स्नातकोत्तर विभाग में कार्यरत सभी 149 आवश्यकता आधारित सहायक प्राध्यापकों की सेवा की नवीनीकरण और विस्तार किया गया। सभी प्राध्यापकों को ये निर्देश दिया गया है कि वे कुलसचिव के कार्यालय में सोमवार तक अपना एग्रीमेंट पेपर महाविद्यालय के प्राचार्य के माध्यम से भिजवा दें। ज्ञात हो कि झारखंड के सभी आवश्यकता आधारित प्राध्यापकों की सेवा का एग्रीमेंट 31 मार्च को ही समाप्त हो चुका है। सरकार के देर से फैसले लेने के चलते इनका वेतन अप्रैल माह से बकाया है। सरकार ने एक पत्र जारी कर के पूर्व में सभी विश्वविद्यालय को भेजा था कि इनकी सेवा यथवात लेते रहिये।

DC ने किया चितरपुर व गोला प्रखंड का दौरा

चितरपुर रजरप्पा फोरलेन मार्ग पर हो रहे कार्यो का लिया जायजा, दिए निर्देश

PHOTON NEWS RAMGARH: उपायुक्त रामगढ़ माधवी मिश्रा ने गुरुवार को चितरपुर एवं गोला प्रखंड का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने सर्वप्रथम चितरपुर प्रखंड अंतर्गत चितरपुर रजरप्पा फोरलेन मार्ग पर बाकी बचे कार्यों को पूर्ण करने हेतु दिए गए निर्देश के आलोक में अब तक किए गए कार्यों का जायजा लिया। मौके पर उपायुक्त ने कार्यपालक अभियंता पथ प्रमंडल रामगढ़ को जल्द से जल्द कार्य पूर्ण करने का निर्देश दिया। वहीं सुरक्षा दृष्टिकोण से उपायुक्त ने चितरपुर रजरप्पा फोरलेन मार्ग पर पड़ने वाले रेलवे क्रॉसिंग के समीप हाइट बैरियर लगाने सहित आवश्यकता अनुसार अन्य सुरक्षा उपबंध करने के संबंध में महत्वपूर्ण निर्देश दिए। वहीं पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से उपायुक्त ने फोरलेन मार्ग अंतर्गत पड़ने वाले डिवाइडरों पर वृक्षारोपण व सुरक्षा संबंधित अनुबंध करने हेतु आवश्यक निर्देश दिए।

जायजा लेतीं रामगढ़ उपायुक्त माधवी मिश्रा ● फोटोन न्यूज

दौरे के क्रम में चितरपुर प्रखंड के उपरांत उपायुक्त ने गोला प्रखंड का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने भारतमाला परियोजना के तहत गोला ओरमांझी पथ निर्माण कार्यों का जायजा लिया। मौके पर परियोजना निदेशक एनएचएआई रामगढ़ ने उपायुक्त को अब तक किए गए कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। उपायुक्त ने कार्यों के दौरान सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने व योजनाबद्ध तरीके से ससमय कार्य पूर्ण करने को लेकर कई निर्देश अधिकारियों को दिए। इस दौरान अनुमंडल पदाधिकारी रामगढ़, महाप्रबंधक सीसीएल रजरप्पा, परियोजना निदेशक एनएचएआई रामगढ़, संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारियों, अंचल अधिकारियों सहित अन्य उपस्थित थे।

पतरातू के छात्र मास्टर उत्सव भारती साकुरा साइंस प्लान के तहत होंगे जापान रवाना

विद्यालय परिवार में हर्ष, दी गई बधाई, जापान के लिए आज होंगे रवाना

PHOTON NEWS BHURKUNDA: नवल किशोर प्रसाद के पुत्र सह केन्द्रीय विद्यालय पतरातू के 12वीं साईंस का छात्र मास्टर उत्सव भारती जापान-एशिया यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम इन साइंस के तहत जापान के ओसाका के लिए शुक्रवार को रवाना होंगे। प्रभारी प्राचार्य आमोद कुमार सिंह ने प्रातरूकालीन सभा में मास्टर उत्सव भारती को शुभकामनायें दी और छात्रों को संबोधित करते हुए बताया कि केन्द्रीय विद्यालय पतरातू के लिए आज गौरवशाली दिन है। साकुरा साइंस एक ऐसा प्रोग्राम है जो युवा वैज्ञानिकों को जापान में वैज्ञानिक अध्ययन और अनुभव के लिए एक मंच प्रदान करता है, और हमारे विद्यालय के छात्र को यह मौका मिला है। सकुरा साइंस प्लान का मुख्य उद्देश्य एशियाई देशों के युवा वैज्ञानिकों के बीच सहयोग, विश्वास और संवाद को प्रोत्साहित करना है। इसके माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नवीनतम विकासों को साझा करने का एक मंच प्रदान किया जाता है। मास्टर उत्सव भारती के सपनों को मानों पंख लग गये हैं, अपनी बात रखते हुए उन्होंने विद्यालय के सभी शिक्षकों को धन्यवाद दिया। जापान जाने को ले मास्टर उत्सव काफी खुश दिखें और आत्मविश्वास से लबरेज थें।

छात्र को जापान जाने की शुभकामना देते शिक्षक ● फोटोन न्यूज

इस प्रोग्राम में भाग लेने के बाद जापानी संस्थानों के कार्यकला, अनुशासन, नई वैज्ञानिक पद्धतियों को देखने का अवसर मिलेगा। ज्ञात हो कि यह प्रोग्राम एक बड़ी संख्या में युवा वैज्ञानिकों को आमंत्रित करता है और उन्हें युवा वैज्ञानिकों के बीच नेटवर्किंग और सहयोग का मौका देता है। यह वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मानव संबंधों को मजबूत करके जापान और एशिया के अन्य देशों के बीच सहयोग और सद्भाव उत्पन्न करता है। इस वर्ष संपूर्ण भारत से बीस छात्र एक सप्ताह जापान में बितायेंगे। मास्टर उत्सव ने सभी को भरोसा दिलाया कि मैं अपने अनुभवों से विद्यालय और समाज के लिए कुछ अलग हटकर करूंगा।

बड़कागांव में जल्द होगी विकास की बारिश : रोशनलाल चौधरी

ट्रांसफार्मर का उद्घाटन करते रोशनलाल चौधरी ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS BHURKUNDA: बलकुदरा एवं कुरसे पंचायत वासियों को समर्पित ट्रांसफार्मर का गुरूवार को उद्घाटन हुआ। इसका उद्घाटन आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह बड़कागांव विधानसभा प्रभारी रोशनलाल चौधरी ने विधिवत पूजा-अर्चना व फीता काटकर किया। मालूम हो कि तकनीकी खामियों के कारण कुतुलवा टोला में लगा ट्रांसफार्मर अचानक जल गया था। जिसके कारण स्थानीय ग्रामीणों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। मामले की सूचना के बाद रोशनलाल चैधरी ने त्वरित पहल करते हुए ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया। स्थानीय ग्रामीणों ने इस नेक पहल के लिए रोशनलाल चैधरी के प्रति आभार प्रकट करते हुए उन्हें बधाई दी। मौके पर रोशन लाल चैधरी ने कहा कि ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान आजसू की पहली प्राथमिकताओं में शामिल हैं। उन्होंने कहा कि दिक्कत होने पर सूचना दें हर हाल में समस्याओं का समाधान होगा। चैधरी ने कहा कि बड़कागांव में विकास की रोशनी फैलाना ही आजसू का लक्ष्य है। मौके पर आजसू के केंद्रीय सचिव विजय साहु, संतोष यादव, अनिल सोनी, सुरेश सोनी उर्फ थापा, संतोष यादव, पवन मुंडा, राजू मुंडा, रवि मुंडा, सुशील मुंडा, बादल कुमार सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद थें।

स्वास्थ्य समृद्धि वाहन परियोजना के तहत 15 दिवसीय शिविर सफलतापूर्वक संपन्न

PHOTON NEWS RAMGARH: रामगढ़ जिला अंतर्गत सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के कुपोषित बच्चों के कुपोषण स्थिति में सुधार के मद्देनजर जिला प्रशासन रामगढ़ की पहल के अंतर्गत संचालित स्वास्थ्य समृद्धि वाहन परियोजना के तहत पहला 15 दिवसीय शिविर पतरातू प्रखंड में बुधवार को संपन्न हुआ। स्वास्थ्य समृद्धि वाहन के माध्यम से पतरातू प्रखंड अंतर्गत पतरातू पंचायत के दुर्गा मंडप पतरातू, पतरातू बस्ती, भुइया टोला पतरातू, ब्लॉक मोड़ पतरातू एवं शांति मोहल्ला पतरातू क्षेत्र में रह रहे बच्चों को कुपोषण जांच एवं ग्रामीणों व अन्य को टेलीमेडिसिन सेवा उपलब्ध कराई गई। शिविर के दौरान शुरूआत के 3 दिनों में पूरे क्षेत्र में व्यापक सर्वे किया गया इस दौरान कुल 229 बच्चों की स्क्रीनिंग की गई जिनमें कुल 39 बच्चों को कुपोषित पाया गया जिसके उपरांत उनके उपचार की प्रक्रिया शुरू हुई। उपचार के दौरान सभी कुपोषित बच्चों को तीन समय का पौष्टिक आहार नियमित रूप से उपलब्ध कराया गया वही महिलाओं को अपने बच्चे कुपोषण की स्थिति को समझने, बच्चे के जन्म के उपरांत शुरूआती 1000 दिनों तक बच्चे के पालन पोषण में ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण जानकारियां सहित कई अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूक किया गया। नियमित रुप से पौष्टिक आहार मिलने व अन्य उपचार के कारण शिविर के आखिरी दिन तक 39 में से 35 बच्चों में सकारात्मक बदलाव देखा गया एवं उनके वजन में बढ़ोतरी हुई। गौरतलब हो कि शिविर समाप्ति के उपरांत भी परियोजना के तहत कुपोषित बच्चों की स्थिति पर नजर रखी जाएगी वही समय-समय पर आवश्यकतानुसार उनके उपचार हेतु कार्य किया जाएगा। स्वास्थ्य समृद्धि वाहन परियोजना के माध्यम से कुपोषण के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में भी बड़ा कार्य किया गया। 15 दिवसीय शिविर के दौरान कुल 162 ग्रामीणों को टेलीमेडिसिन सेवा के माध्यम से चिकित्सीय परामर्श उपलब्ध कराते हुए उनके रोग के उपचार हेतु कार्रवाई की गई।

- विस्तृत सर्वे के उपरांत क्षेत्र के 229 बच्चों की हुई कुपोषण जांच
- 39 कुपोषित बच्चों की पहचान कर उनके उपचार हेतु किया गया कार्य
- 162 ग्रामीणों को उपलब्ध कराई गई टेलीमेडिसिन सेवा
- शिविर संपन्न होने तक 39 में 35 बच्चों के पोषण स्थिति में आया सकारात्मक बदलाव

स्वास्थ्य समृद्धि वाहन की विशेषताएं

विस्तृत कवरेज

एक चालित वाहन से दो या दो से अधिक जगहों पर पोषण शिविर संचालित होगा। समय और धन बचाने के उद्देश्य से निर्मित इस चालित वाहन से 30 मिनट के अंतराल पर भोजन एवं अन्य सामाग्री दो या दो अधिक शिविर स्थान पर पहुचई जा सकेगी।

भंडार कक्ष

यह वाहन भंडार कक्ष का भी कार्य करेगी इसमे विभिन्न आकार की संद्रखें और दराज है जिसमे पोषण शिविर की समग्रियों का सुरक्षित भंडारण किया जाएगा।

कार्य

यह वाहन शिविर कर्मियों को सुदूर ग्रामीण क्षेत्र तक ले जाने मे सहयोग करेगी। केंद्रीय कृत निगरानी वाहन में लगे क्लाउड वेस्ड कैमरे द्वारा शिविर के प्रतेक गतिविधियों की निगरानी रखी जाएगी।

लक्षित समूह

उम्र के सापेक्ष में कम वजन वाले अति कुपोषित बच्चे एवं उनके अभिभावक अधिकतम 40 कुपोषित बच्चे प्रत्येक शिविर में लाभान्वित होंगे

सेवाएं

चलित कुपोषण उपचार वाहन द्वारा दो तरह की सुविधाएं दी जाएंगी।

नियमित भोजन

कुपोषित बच्चों को उम्र के हिसाब से उपायुक्त पौष्टिक भोजन दिन में तीन बार दिया जाएगा यह भोजन विशेषज्ञ की देखरेख में बनाया जाएगा।

टेलीमेडिसिन

यह मेडिकल वैन रोस्टर के अनुसार गांव- गांव जाएगी और कुपोषित बच्चों के साथ- साथ वयस्कों के लिए टेलीमेडिसिन पर काम करेगी।

सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में सास्कृतिक प्रतियोगिता संपन्न

प्रतियोगिता के आयोजनों से बच्चों में बौद्धिक क्षमता का होता है विकास : विजयंत कुमार

PHOTON NEWS BHURKUNDA: बिरसा चैक भुरकुंडा स्थित ए ला एंग्लाइज सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में चले रहे नृत्य-संगीत व चित्रांकन प्रतियोगिता का गुरुवार को समापन हुआ। प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागियों को मेडल व उपहार देकर सम्मानित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य ने कहा कि ऐसे आयोजनों से बच्चों में बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। उन्होंने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ इस तरह की प्रतियोगितां बच्चों में नये ऊर्जा का संचार भरता है। कुमार ने कहा कि बच्चों को पढ़ाई के साथ हर क्षेत्र में अव्वल बनाने के लिए विद्यालय प्रबंधन हर सार्थक कदम उठाती रहेगी। बच्चों का सर्वांगीण विकास ही विद्यालय का उद्देश्य है। मौके पर कला प्रतियोगिताओं में सफल विभिन्न सदनो के प्रतिभागियों को कला और संगीत विभाग के शिक्षक सिद्धार्थ कुमार द्वारा नर्सरी से दसवीं वर्ग के विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। मौके पर सांस्कृतिक विभागाध्यक्ष सिद्धार्थ कुमार ने बताया कि विद्यालय में इस तरह के प्रतियोगिताओ में सभी सदनों के विद्यार्थियों ने रुचि के साथ भिन्न-भिन्न कलाओ में अपनी जोहर दिखाया। उन्होंने कहा कि विद्यालय आगे भी इस तरह के प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों के प्रतिभा को निखारने का काम करेगा। नृत्य प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागियो में रितिका, सानिया, सोनम मुर्मू, मधु, सुमन, अनुष्का शर्मा आदि शामिल हैं। वाद्य यंत्रों प्रतियोगिता में नाजनीन परवीन शेख, तौसीफ रजा, आयुष सोनी, गायन में श्वेता, हर्ष गुप्ता, रिया एवं चित्रांकन में तृषा बेदिया, साक्षी, हर्षित, चिराग बेदिया, गणेश और छवि कुमारी शामिल हैं।

सफल प्रतिभागी को उपहार देकर सम्मानित करते प्राचार्य ● फोटोन न्यूज

पत्थर से कूचकर महिला की हत्या आरोपी को आजीवन कारावास

PHOTON NEWS CHAIBASA: पत्थर से कुचल कर महिला की हत्या कर देने के आरोपी आजाद बोदरा को प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश के न्यायालय में दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। साथ ही 10 हजार रूपए का जुमार्ना भी लगाया गया है। आजाद बोदरा सोनुवा थाना क्षेत्र के एलबेड़ा गांव का रहने वाला है। इस संबंध में 27 सितंबर 2021 को आरोपी के खिलाफ सोनुवा थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। जिसमें बताया गया था कि 27 सितंबर को करीब 3 बजे आजाद बोदरा ने पूर्व की बात को लेकर मुक्ता बोदरा के घर आया और गाली गलौज करते हुए बाल में पकड़ कर घसीटते हुए घर से बाहर निकाला। इसके बाद घर के पास स्थित चापाकल के पास पटक दिया और चापाकल के पास पड़े पत्थर से सिर पर मार दिया। जिससे घटनास्थल पर ही मुक्ता बोदरा की मृत्यु हो गई थी। पुलिस ने अनुसंधान के क्रम में आजाद बोदरा को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा। इसके बाद सभी साक्ष्यों को वैज्ञानिक तरीके से संग्रह करते हुए न्यायालय में आरोप पत्र समर्पित किया। जिसके आधार पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश के न्यायालय में दोषी करार देते हुए अभियुक्त आजाद बोदरा को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है।

लोकसभा चुनाव को लेकर विधायक मुंडा ने खुलकर किया विचार-विमर्श

PHOTON NEWS CHAIBASA: परिसदन में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धांजलि देने के बाद प्रवास पर आए खूंटी के विधायक नीलकंठ मुंडा ने जिलाध्यक्ष सतीश पुरी की अध्यक्षता में विधानसभा स्तरीय संगठनात्मक बैठक की। बैठक में महा जनसंपर्क अभियान से लेकर बूथ सशक्तिकरण के अंतर्गत अपना बूथ सबसे मजबूत, आगामी लोकसभा चुनाव तथा अन्य विषयों को लेकर कार्यकताओं के साथ खुलकर विचार विमर्श किया। उन्होंने कहा कि किस तरह से दूसरे दल के लोग ने इस जिला का सिर्फ शोषण किया है। हमारी पार्टी भारतीय जनता पार्टी दूसरे दलों से अलग सोच रखती है। क्योंकि भारतीय जनता पार्टी कार्यकताओं की पार्टी है। हमने देखा है कि हर क्षेत्र में चाईबासा के कार्यकर्ता हमेशा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। बैठक का स्वागत भाषण जिलाध्यक्ष सतीश पुरी ने दिया। जबकि इसका संचालन महामंत्री जगदीश पाट पिगुंआ ने किया। धन्यवाद ज्ञापन महामंत्री प्रताप कटियार किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिलाध्यक्ष सतीश पुरी, प्रवास पर आए खूंटी विधानसभा के विधायक नीलकंठ मुंडा, पूर्व विधायक जवाहरलाल बानरा, पूर्व विधायक गुरुचरण नायक, सरायकेला खरसावां के संगठन प्रभारी जेबी तुबिद, एसटी मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष गीता बालमूचू, मनोज लेयांगी, अनिल बिरुली, जगदीश पाट पिंगुआ, प्रताप कटियार, सन्नी पासवान, नवीन गुप्ता, मंगता गोप, लिबिया लागुरी, भूदया हायबुरु, महादेव सिंहदेव, दिलीप पोद्दार, रूपा दास, सुखमति बिरुआ, चंद्रमोहन तियू, पिंटू कुमार,सुभाष, कुंज बिहारी खंडाइत समेत अन्य भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

डायन प्रथा प्रतिषेध अधिनियम 2001 के प्रति किया गया ग्रामीणों को जागरूक

सामाजिक कुरीति निवारण योजना अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

PHOTON NEWS RAMGARH: सामाजिक कुरीति निवारण योजना के तहत गुरुवार को रामगढ़ जिला अंतर्गत गोला प्रखंड के पंचायत भवन, मगनपुर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यशाला में उपस्थित ग्रामीणों व अन्य को सामाजिक कुरीतियों जैसे डायन प्रथा एवं इसके रोकथाम हेतु डायन प्रथा प्रतिषेध अधिनियम 2001 के संबंध में विस्तार से जानकारी देने के क्रम में उन्हें जागरूक किया गया वही कार्यशाला के दौरान ग्रामीणों को सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के तहत बच्चियों को मिलने वाले लाभ, प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना सहित अन्य योजनाओं की जानकारी देने के क्रम में ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ लेने हेतु प्रेरित किया है। क्या है डायन प्रथा प्रतिषेध अधिनियम 2001 डायन की पहचान यदि कोई भी व्यक्ति - जो किसी अन्य व्यक्ति को 'डायन' के रूप में पहचान करता हो और उस पहचान के प्रति अपने किसी भी कार्य, शब्द या रीति से कोई कारवाई करे, तो इसके लिए उसे अधिकतम तीन महीने तक कारावास की सजा अथवा एक हजार रुपये जुमार्ने की सजा अथवा दोनों से दंडित किया जायेगा। प्रताड़ित करने का हजार्ना- यदि कोई भी व्यक्ति जो किसी औरत को डायन के रूप में पहचान कर उसे शारीरिक या मानसिक यातना जानबूझ कर या अन्यथा प्रताड़ित करता है, तो उसे छः माह की अवधि के लिए कारावास या सजा अथवा दो हजार रुपए तक जुमार्ने अथवा दोनों सजा से दंडित किया जायेगा।

हो भाषा के लिए रवींद्र बाल संस्कार केंद्र ने किया पोस्ट कार्ड लेखन

PHOTON NEWS CHAIBASA: हो भाषा को संविधान के आठवीं अनुसूची शामिल करने की मांग को लेकर राष्ट्रपति, गृहमंत्री और प्रधानमंत्री के नाम पोस्ट कार्ड भेजने का अभियान चल रहा है। इसे लेकर झींकपानी के असुरा स्थित रवीन्द्र बाल संस्कार केंद्र स्कूल में अभिभावक, शिक्षक-शिक्षिकाओं व बच्चों ने पोस्ट कार्ड लेखन किया। आदिवासी हो समाज युवा महासभा के प्रदेश कमेटी के संगठन सचिव राहुल पूर्ति, संस्कृति सचिव जगन्नाथ हेस्सा व आमंत्रित सदस्य फूलमती सिरका के निर्देश पर चले पोस्ट कार्ड लेखन अभियान में स्कूल के बच्चों समेत निदेशक सिकंदर बुड़ीउली, शिक्षक-शिक्षिकाएं मनीषा हेम्ब्रम, सरिता सरीमा, तुलसी बुड़ीउली, आश्रिता बुड़ीउली व अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। संस्कृति सचिव जगन्नाथ हेस्सा ने कहा कि अपनी भाषा से शिक्षा ग्रहण करने से साहित्य के हर पहलू को आसानी से समझा जा सकता है।

BRIEF NEWS

आईएएस अविनाश कुमार को मिला अतिरिक्त प्रभार

RANCHI : ऊर्जा विभाग के अपर मुख्य सचिव के पद पर पदस्थापित अविनाश कुमार को अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। अविनाश कुमार को अपने कार्यों के साथ झारखंड ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड का अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक और झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड का प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। साथ ही गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव (आपदा प्रबंधन प्रभाग को छोड़कर) के भी अतिरिक्त प्रभार में रहेंगे। इस संबंध में बुधवार देर रात झारखंड सरकार के कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राज भाषा विभाग ने अधिसूचना जारी कर दी है।

ट्रक की चपेट में आने से एक की मौत

RANCHI : रांची के पुंदाग इलाके में गुरूवार को ट्रक की चपेट में आने से युवक घोरन महतो की मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया है। वहीं एक अन्य युवक मंगल टोप्पो गंभीर रूप से घायल है। पुलिस का कहना है कि दोनों युवक बाइक से नया सराय की ओर जा रहे थे। तभी ट्रक ने दोनों को चपेट में ले लिया। पुलिस ट्रक को जब्त कर लिया है। घटना के बाद ट्रक का चालक और खलासी मौके से फरार हो गए।

मंदिर के दान पेटी का ताला तोड़कर चोरी

RANCHI : पिठोरिया थाना क्षेत्र के बालू गांव में स्थित देवी मंदिर परिसर में लगे दान पेटी का ताला तोड़कर चोरी करने का मामला गुरुवार को प्रकाश में आया है। घटना की सूचना मंदिर के पुजारी ने पुलिस को दे दी है। मंदिर के दानपेटी में चोरी की वारदात से ग्रामीण आक्रोशित है। ग्रामीणों का कहना है कि इससे पूर्व भी दो बार मंदिर के दान पेटी में चोरी हो चुकी है।

युवक ने लगाया मारपीट करने का आरोप

RANCHI : सदर इलाके में रहने वाले दिलीप सिंह ने परवेज पर मारपीट करने का आरोप लगाते हुए सदर थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। दिलीप ने पुलिस को बताया कि वह अपने दोस्त नीरज के घर में खाना खा रहा था। तभी आरोपित अपने साथियों के साथ पहुंचा और दोनों पर जानलेवा हमला कर दिया। पुलिस का कहना है कि मामला दर्ज कर लिया गया है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस आरोपित के घर गई थी लेकिन वह फरार है।

मांडर में लूटपाट करने वाले दो युवक गिरफ्तार

RANCHI : मांडर थाना की पुलिस ने गुरूवार को तसलीम अंसारी के साथ लूटपाट करने वाले दो युवक आशीष कुमार राम और किशन महली को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। अन्य आरोपी की तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है। ग्रामीण एसपी नौशाद आलम ने बताया कि तीन जुलाई को तसलीम अंसारी टाल गेट पर ड्यूटी करने जा रहा था। उसी वकत आरोपियों ने उसे पकड़ लिया और मोबाइल और पांच सौ रुपये लूटकर फरार हो गए।

सड़क दुर्घना मृत के आश्रितों को मुआवजा की मिली स्वीकृति

RANCHI : विशिष्ट स्थानीय आपदा से प्रभावित व्यक्तियों को हुई क्षतिपूर्ति के लिए जिला प्रशासन की ओर से मुआवजा दिया जायेगा। उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने राज्य विशिष्ट स्थानीय आपदा सड़क दुर्घटना के तहत क्षतिपूर्ति मुआवजा अनुदान की स्वीकृति दी है।

atom美
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

जमीन कारोबारी कमल भूषण के ACCOUNTANT संजय कुमार हत्याकांड में पुलिस को अपराधी छोटू व विशाल की तलाश

छह से ज्यादा संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही पुलिस, जेल से भी जुड़ा हो सकता है तार

CRIME REPORTER RANCHI : सुखदेवनगर थाना पुलिस जमीन कारोबारी कमल भूषण के अकाउंटेंट संजय कुमार सिंह की हत्या के मामले में लगातार छापेमारी कर रही है। पुलिस को अपराधी छोटू और विशाल की तलाश है। इस मामले में पुलिस छह से ज्यादा संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। पुलिस को शक है कि संजय की हत्या में जमीन कारोबारी कमल भूषण के हत्यारे शामिल हैं। जमीन कारोबारी कमल भूषण हत्याकांड में छोटू मुख्य आरोपी है। पुलिस छोटू के घर में इश्तेहार चिपका चुकी है। लेकिन छोटू पुलिस की पकड़ में नहीं आ रहा है। पुलिस का कहना है कि छोटू के घर की कुर्की की जाएगी। पुलिस इस संबंध में कोर्ट से आदेश लेने के बाद आगे की कार्रवाई करेगी। आपकों बता दें कि जमीन कारोबारी कमल भूषण की 30 मई, 2022 को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में रांची पुलिस ने चार अपराधी राहुल कुजूर, डब्लू कुजूर, काविश अदनान और मुनव्वर अफिक को गिरफ्तार कर जेल भज दिया था। कुछ दिनों के बाद मामले में सोनू यादव ने कोर्ट में सरेंडर किया था। दो मुख्य आरोपी छोटू कुजूर और विशाल मामले में अबतक तक

संजय कुमार

फरार हैं। पुलिस को आशंका है कि फरार दोनों आरोपियों ने खुद या दूसरे से संजय कुमार सिंह की हत्या करवाई है।

रिम्स में हुआ पोस्टमार्टम, सिवान में होगा अंतित संस्कार : सुखदेव नगर पुलिस का कहना है कि गुरूवार को रिम्स में संजय कुमार के शव का पोस्टमार्टम हुआ। पोस्टमार्टम के दौरान शहर के कई जमीन कारोबारी मौजूद थे। रिम्स में भी लोग चर्चा कर रहे थे कि इस हत्याकांड में छोटू का हाथ है। कमल भूषण की हत्या करने के बाद छोटू ने हत्या कने की जिम्मेवारी ली थी। लेकिन इस बार वह सामने नहीं आया है। संजय कुमा के घरवालों शव को लेकर सिवान चले गए हैं। संजय का अंतिम संस्कार सिवान में किया जाएगा।

सर्वोदय नगर से लापता हुए शूटर

पुलिस का कहना है कि काली मंदिर रोड में संजय कुमार को गोली मारने के बाद दो अपराधी बाइक से सर्वोदय नगर तक पहुंचे लेकिन वहां से लापता हो गए। सर्वोदय नगर के पास सीसीटीवी फुटेज में अपराधियों को देखा गया है। लेकिन सर्वोदय नगर से कई रास्ता निकलता है। वहां से रिंग रोड,पंडरा और कांके रोड की तरफ का रास्ता है। अपराधी किस रास्ते से फरार हुए है पुलिस को जानकारी नहीं मिल पा रही है। संजय कुमार की रेकी करने में कौन कौन अपराधी शामिल थे इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है। इधर, पुलिस ने कमल भूषण के बेटे की बढ़ाई सुरक्षापुलिस ने अकाउंटेंट संजय कुमार की हत्या के बाद मृतक कमल भूषण के बेटे की सुरक्षा बढ़ा दी है। कमल भूषण का बेटा प्राइवेट बाडीगार्डी भी रखता है। पुलिस का कहना है कि शूटरों की गिरफ्तारी के बाद ही इसका खुलासा हो पाएगा कि संजय हत्याकांड के पीछे किसका है। पुलिस को कुछ लोगों पर शक है जिसकी जांच की जा रही है।

हत्याकांड में पेशेवर शूटरों का हाथ

पुलिस का कहना है कि इस हत्याकांड में पेशेवर शूटरों का हाथ है। जिस प्रकार घटना को अंजाम दिया गया है और जिस तरह से अपराधी फरार हुए है वह कोई पेशेवर ही हो सकता है। सड़क पर ब्रेकर का फायदा उठाना यह शातिर अपराधी की निशानी है। भागने के क्रम में शूटरों ने मुख्य रास्ता का इस्तेमाल नहीं किया ताकि वह सीसीटीवी में कैद हो जाएंगे। इससे स्पष्ट होता है कि हत्याकांड को अंजाम देने से पहले पूरी तरह रेकी की गई है। एसएसपी किशोर कौशल ने इस हत्याकांड का खुलासा करने की जिम्मेदारी एसआइटी को दिया है। एसआइटी का नेतृत्व सिटी एसपी कर रहे हैं। एसआइटी ने गुरूवार को कई इलाकों में छापेमारी किया लेकिन कोई अहम सुराग नहीं मिल पाया। एसएसपी ने एसआइटी को आदेश दिया है कि कमल भूषण हत्याकांड में जो आरोपी जेल में बंद हैं उनसे पूछताछ करें।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती में मनरेगा का अहम रोल : सीएम

मुख्यमंत्री ने की झारखंड राज्य ग्रामीण रोजगार गारंटी परिषद की बैठक

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि राज्य सरकार का ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर विशेष जोर है। इस लिहाज से मनरेगा से जुड़ी योजनाएं झारखंड के लिए काफी मायने रखती है । इन योजनाओं में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए इसकी मजबूत निगरानी होनी चाहिए। मुख्यमंत्री गुरुवार को झारखंड राज्य ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना परिषद की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में झारखंड राज्य ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना परिषद की बैठक हर तीन माह में आयोजित करने का निर्देश अधिकारियों को दिया, ताकि तमाम योजनाओं की नियमित और विस्तार से समीक्षा हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा से जुड़ी योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए लाभुकों की भी जवाबदेही तय होनी चाहिए। इससे योजनाओं को तय समय सीमा में पूरा करने में भी मदद मिलेगी और लाभुकों को बिचौलियों से निजात मिलेगी।

झारखंड राज्य ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना परिषद की बैठक में सीएम।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा के तहत राज्य सरकार द्वारा भी कई योजनाएं चलाई जा रही है। ऐसे में श्रमिकों के कार्य की कोई कमी नहीं है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि आप इन योजनाओं की ग्रामीणों को जानकारी दें और उन्हें इन योजनाओं से जोड़ने की दिशा में पहल करें। इससे उनकी आमदनी में बढ़ोतरी होगी और गांव का भी तेजी विकास होगा।

मनरेगा श्रमिकों के सामाजिक सुरक्षा के प्रावधानों का प्रचार-प्रसार करें : मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा के तहत मजदूरी करने वालों के लिए भी सामाजिक सुरक्षा के तहत सहायता अनुदान का प्रावधान है। ऐसे में इसकी जानकारी ग्रामीणों को हो, इसलिए सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी योजनाओं का बड़े स्तर पर प्रचार प्रसार सुनिश्चित करें।

चुआं और छोटे-छोटे झरने का जियो मैपिंग कराएं : मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि राज्य विशेषकर पहाड़ी इलाकों में अनेको चुआं और छोटे-छोटे झरने हैं। इन सभी का जियो मैपिंग कराने की परियोजना बनाएं ताकि इसकी पानी की क्षमता को बढ़ाकर समुचित इस्तेमाल किया जा सके। उन्होंने संवर्धन योजना के तहत बनने वाले कुओं का भी जियो मैपिंग कराने को कहा। मुख्यमंत्री ने डीआरडीए का पंचायती राज विभाग में विलय के आलोक में मनरेगा के अंतर्गत जिला कार्यक्रम समन्वयक की जिम्मेदारी जिलों के उपायुक्तों को देने के प्रस्ताव पर अपनी सहमति दे दी।

मनरेगा से जुड़े अहम तथ्य

- चालू वित्तीय वर्ष (2023 -24) में 900 लाख मानव दिवस सृजित करने का लक्ष्य है। जून माह के अंत तक 360.32 मानव दिवस सृजित हो चुका है।
- वित्तीय वर्ष 2023- 24 में जून माह तक सक्रिय जॉब कार्डों की संख्या 34.28 लाख और सक्रिय मजदूरों की संख्या 42.93 लाख है।
- मनरेगा में ससमय मजदूरी भुगतान की उपलब्धि लगभग शत प्रतिशत है।
- वित्तीय वर्ष 2023-24 में अब तक सृजित परिसंपत्तियों (पूर्ण योजनाएं) 275565 है।
- नीलाम्बर-पीताम्बर जल समृद्धि योजना के तहत 403817 योजनाएं ली गयी हैं, जिनमें 333123 पूर्ण कर ली गई हैं।
- बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत 105419 एकड़ में फलदार वृक्ष लगाएं जा रहे हैं।
- वीर शहीद पोटो हो खेल विकास योजना के तहत ली गयी 4776 योजनाओं में 3537 पूर्ण हो चुकी है।
- दीदी बाड़ी योजना के तहत ली गयी 298690 योजनाओं में 162372 पूर्ण हो चुकी है।
- दीदी बगिया योजना के तहत 394 योजनाओं का क्रियान्वयन हो रहा है।
- बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना के तहत 23958 कूपों का निर्माण कार्य जारी है।
- वर्तमान में 16 जिलों में लोकपाल कार्य कर रहे हैं और 5 जिलों में लोकपाल की नियुक्ति प्रक्रिया अंतिम चरण में है।
- मनरेगा की सोशल ऑडिट में वित्तीय अनियमितता, वित्तीय विचलन, प्रक्रिया उल्लंघन और शिकायत के 1234956 मामले सामने आएं हैं, जिसमे 87092 मामलों में एटीआर अपलोड हो चुका है और 63819 मामले निष्पादित हो चुके हैं।
- मनरेगा श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा का भी प्रावधान है। इसके अंतर्गत दुर्घटना में मौत अथवा विकलांग होने पर दो लाख रुपये और सामान्य मौत पर एक लाख तथा मनरेगा के अंतर्गत निर्मित डोभा में डूबकर मौत पर एक लाख रुपये उसके आश्रित को अनुदान के रूप में दिया जाता है।

जमीन के नाम पर 75 लाख की ठगी करने वाला बिल्डर पांच साल बाद ARREST

CRIME REPORTER RANCHI : जमीन के नाम पर 75 लाख की ठगी करने वाला बिल्डर निजामुद्दीन अंसारी को चुटिया थाना पुलिस ने पांच साल बाद उसके घर से गिरफ्तार किया है। वह बरियातू बस्ती के पहाड़ी के समीप का निवासी है। उस पर वर्ष 2018 में चुटिया थाना में होटल शिवालिक के मालिक अनुप चावला ने प्राथमिकी दर्ज करायी थी। कांटाटोली में एक भूखंड के लिए चावला से निजामुद्दीन अंसारी ने 25 लाख रुपये एडवांस ले लिया था। उसके बाद थोड़े-थोड़ समय पर 50 लाख रुपये और लिये थे, काफी दिनों तक उसने न जमीन दिया और न ही रुपये वापस किये। बाद में पता चला कि उस जमीन पर 2013 से विवाद चल रहा है और कोर्ट में टाइटल सूट का केस भी चल रहा है। इसलिए यह शुद्ध रूप धोखाधड़ी और 420 का मामला है। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद से ही पुलिस वारंट लेकर कई बार उसे गिरफ्तार करने का प्रयास किया, लेकिन वह फरार मिला। बाद में पुलिस ने इश्तेहार चिपकाया, उसके बाद भी जब उसकी गिरफ्तारी नहीं हुई तो घर की कुर्की जब्ती भी की गयी। इसके बाद भी वह फरार चल रहा था। पुलिस उसके गिरफ्तारी के प्रयास में लग हुई थी।

नाबालिग के अपहरण का आरोपी को बंगाल पुलिस ने रांची से दबोचा

पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग से नाबालिग लड़की के अपहरण का आरोपी पिठोरिया के काटमकुली निवासी हबीब अंसारी को इटकी के त्रिवेंदा चौक के समीप से बंगाल पुलिस ने गुरुवार को गिरफ्तार किया है। साथ ही नाबालिग को सकुशल बरामद किया है। उसे रांची के सिविल कोर्ट में ट्रांजिट रिमांड के लिए पेश किया गया। ट्रांजिट रिमांड के बाद बंगाल पुलिस उसे ले गयी। दार्जिलिंग में शादी कई नियत से नाबालिग के अपहरण की प्राथमिकी उसके परिजनों ने दर्ज कराया था। बंगाल पुलिस नाबालिग का मेडिकल जांच और 164 का बयान भी वहां दर्ज करायेगी। बंगाल पुलिस के साथ नाबालिग के रिश्तेदार भी रांची आये हुए थे। पुलिस ने बताया कि हबीब अंसारी रांची से दार्जिलिंग भाड़े की गाड़ी चलता था। उसे नाबालिग से प्यार हो गया और वह उसे शादी की नियत से लेकर रांची आ गया। वह पुलिस से बचने के लिए पिठौरिया स्थित घर में नहीं रह कर इटकी में रिश्तेदार के साथ रह रहा था। पश्चिम बंगाल पुलिस रांची पहुंची। आरोपी का मोबाइल लोकेशन इटकी का आ रहा था। पुलिस ने इटकी पुलिस के सहयोग से उसे गिरफ्तार कर लिया। इटकी थाना प्रभारी अमित प्रसाद ने बताया कि बंगाल पुलिस आरोपित और नाबालिग को लेकर रवाना हो गयी है।

लालपुर थाना में पदस्थापित रहे दारोगा शशांक कुमार के खिलाफ होगी विभागीय कार्रवाई

युवती का यौन शोषण करने का आरोप, गर्भवती होने पर मंदिर में रचाई थी शादी

CRIME REPORTER RANCHI : सीआईडी की रिपोर्ट के बाद लालपुर थाना में पदस्थापित रहे दारोगा शशांक कुमार के खिलाफ विभागीय कार्रवाई चलेगी। इसे लेकर झारखंड पुलिस मुख्यालय ने रांची एसएसपी पत्र लिखा है, लिखे पत्र में कहा गया है कि लालपुर थाना में दर्ज कांड संख्या 255/2022 का सुपर विजन डीएसपी या एसपी स्तर से कराना सुनिश्चित करें। इस कांड में संबंधित विभागीय कार्यवाही संभवत डीएसपी बुंडू द्वारा की जा रही है, शशांक कुमार को बुंडू डीएसपी के कार्यालय से टैग करते

लालपुर थाना के दारोगा पर यौन शोषण का आरोप, एफआइआर दर्ज
मामला सामने आने के बाद किया गया सस्पेंड, आरोपी दारोगा फरार
द फोटोन न्यूज ने 19 दिसंबर 2022 के अंक में इस खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया था।

हुए विभागीय कार्रवाई का निष्पादन 15 दिनों के अंदर कराना सुनिश्चित करें। प्रथम दृष्टया पाया गया है कि दारोगा शशांक कुमार ने दो शादी की है, जो सरकारी सेवा संहिता के विरूद्ध है। यदि शशांक कुमार के विरुद्ध दूसरी शादी करना प्रमाणित होता है तो इस कृत्य के संबंध में विभागीय कार्रवाई संचालन करना सुनिश्चित करें।

क्या है मामला

लालपुर थाना में पदस्थापित रहने के दौरान दारोगा शशांक कुमार से पीड़ित युवती की बातचीत मोबाइल फोन खो जाने से संबंधित केस को लेकर शुरू हुई थी। इसके बाद वह हमेशा उसे फोन करने लगा। फिर उसने शादी का प्रलोभन देकर कई बार उसका यौन शोषण किया। जब युवती गर्भवती हो गयी, तब शशांक ने युवती से लालपुर थाना परिसर स्थित मंदिर में शादी कर ली। बाद में उसने बहाना बनाकर युवती को अपने साथ नहीं रख कर वापस हॉस्टल छोड़ दिया और दूसरी युवती से शादी कर ली। तब युवती ने दुष्कर्म के आरोप में शशांक के खिलाफ आठ दिसंबर 2022 को लालपुर थाना में केस दर्ज कराया। इस मामले में आरोपी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गयी, तब पीड़ित युवती ने आरोपी दारोगा द्वारा केस उठाने की धमकी देने से संबंधित मामले को लेकर सीआइडी मुख्यालय में शिकायत की थी।

11 को रांची आएगी नीति आयोग की टीम, केंद्रीय योजनाओं की करेगी समीक्षा

PHOTON NEWS RANCHI : नीति आयोग की टीम 11 जुलाई को झारखंड के दौरे पर आएगी और राज्य में चल रही केंद्रीय योजनाओं की समीक्षा करेगी। नीति आयोग के सदस्य डॉ विनोद कुमार पॉल के नेतृत्व में छह सदस्यीय टीम 12 जुलाई को 12.30 बजे प्रोजेक्ट भवन सभागार में राज्य के आला अधिकारियों के साथ बैठक करेगी। इस टीम में वरीय सलाहकार नीरज सिन्हा, डॉ अशोक, ए सोनू सोनकुसरे, डॉ थ्यागराजू, नमन अग्रवाल और एसजी शिंदे शामिल हैं। दो दिवसीय इस दौरे में नीति आयोग की टीम के द्वारा केंद्र और राज्य सरकार के बीच समन्वय और योजनाओं को लेकर मंथन होगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से भी नीति आयोग की टीम के मिलने की संभावना है। जानकारी के अनुसार नीति आयोग की टीम 11 जुलाई को शाम 7.30 बजे दिल्ली से रांची पहुंचेगी। राज्य सरकार ने झारखंड भवन पर आ रहे डॉ विनोद कुमार पाल सहित सभी नीति आयोग के सदस्यों को राजकीय अतिथि घोषित किया है। झारखंड मंत्रालय में 12 जुलाई को 12:30 बजे होने वाली समीक्षा बैठक के दौरान राज्य के मुख्य सचिव सुखदेव सिंह सहित सभी अधिकारी मौजूद रहेंगे। इस बैठक में राज्य में चल रहे हर घर नल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, केंद्रीय मद से बन रही सड़क, स्वास्थ्य एवं रेल हवाई मार्ग के लिए जमीन अधिग्रहण से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना है। इधर, नीति आयोग के टीम के झारखंड दौरे को लेकर राज्य सरकार के विभिन्न विभागों ने तैयारियां शुरू कर दी है। केंद्रीय योजनाओं की अद्यतन स्थिति से संबंधित रिपोर्ट सभी विभागों से मुख्य सचिव कार्यालय में मंगाया जा रहा है, जिससे समेकित रिपोर्ट राज्य की ओर से नीति आयोग को दी जाए।

उल्लेखनीय है कि 27 मई को केंद्रीय नीति आयोग की बैठक में राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सरकार के सामने कई प्रस्ताव रखे थे। उन्होंने एमएसएमई निदेशालय की स्थापना और जिला उद्योग केंद्रों को विकसित करने की मांग को भी रखा था।

स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता के भाई गुड्डू गुप्ता, तत्कालीन डीएसपी और थानेदार सहित 22 लोग केस के हैं आरोपी

मानगो RAPE CASE : पांच आरोपियों की बहस पूरी, आज भी होगी सुनवाई

SPECIAL REPORTER RANCHI : जमशेदपुर के मानगो सहारा सिटी में नाबालिग से दुष्कर्म और देह व्यापार कराने के मामले में आरोपियों की ओर से दाखिल याचिका पर झारखंड हाइकोर्ट में सुनवाई हुई। गुरुवार को हुई सुनवाई के दौरान पांच आरोपियों की ओर से बहस पूरी कर ली गई। जिसके बाद अब पीड़िता और अन्य की ओर से बहस प्रारंभ की जाएगी। इस मामले में शुक्रवार को सुनवाई जारी रहेगी। फिलहाल हाई कोर्ट ने निचली अदालत में चल रही कार्यवाही पर रोक के आदेश को बरकरार रखा है। इस मामले में राज्य के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता के भाई गुड्डू गुप्ता, तत्कालीन डीएसपी और थानेदार सहित 22 लोग आरोपी हैं। जमशेदपुर की निचली अदालत ने सभी को समन जारी किया है। जिसके खिलाफ हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की गई है। आरोपियों की ओर से बहस के दौरान राज्य के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता के भाई गुड्डू गुप्ता सहित पांच की ओर से अदालत को बताया गया कि इस मामले में उनका नाम न तो प्राथमिकी में था और न ही पीड़िता के बयान में आया था। लेकिन दो साल बाद उनका नाम शामिल किया गया है। हाई कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजय प्रसाद की अदालत में इस मामले की सुनवाई हुई। अब शुक्रवार को पीड़िता की ओर से पक्ष रखा जाएगा।

डायन-बिसाही के सबसे अधिक मामले किस जिले में, झालसा ने हाइकोर्ट को दी जानकारी

झारखंड हाइकोर्ट ने डायन-बिसाही की घटनाओं को लेकर स्वतः संज्ञान से दर्ज जनहित याचिका पर ऑनलाइन सुनवाई की। चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र व जस्टिस आनंद सेन की खंडपीठ ने मामले की सुनवाई के दौरान राज्य सरकार को कोर्ट के आदेशों का अनुपालन करने का निर्देश दिया। लोगों के बीच जागरूकता फैलायी जाये। मामले की अगली सुनवाई के लिए खंडपीठ ने 26 जुलाई की तिथि निर्धारित की। इससे पूर्व झारखंड स्टेट लीगल सर्विसेज ऑथोरिटी (झालसा) के सदस्य सचिव की ओर से शपथ पत्र दायर कर बताया गया कि गुमला जिला में डायन-बिसाही की सबसे अधिक घटनाएं होती हैं। मारपीट के साथ-साथ हत्या की घटनाएं अधिक है। झालसा की ओर से जागरूकता अभियान चला कर लोगों को डायन-बिसाही जैसे अंधविश्वास को खत्म करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि डायन-बिसाही की घटनाओं को झारखंड हाइकोर्ट ने गंभीरता से लेते हुए उसे जनहित याचिका में तब्दील कर दिया था।

BRIEF NEWS

जेएनएसी व टाटा स्टील यूआईएसएल ने संयुक्त रुप से शहर के आधा दर्जन नालों की सफाई की

JAMSHEDPUR: अधिसूचित क्षेत्र समिति क्षेत्र स्थित नालों की सफाई का काम तेज कर दिया गया है। गुरुवार को जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति एवं टाटा स्टील यूआईएसएल ने मिलकर क्षेत्र के आधा दर्जन नालों की सफाई की। जिसमें कई बड़े नाले भी शामिल हैं। नाले की सफाई बरसात को देखते हुए की जा रही है। इस दौरान दोनों संस्थानों की अधिकारियों की टीम ने नालों का भौतिक सत्यापन भी किया। जिन क्षेत्रों में नाले की सफाई की गई। इन नालों की हुई सफाई उनमें शमशान घाट मेन रोड इंद्र नगर, नामदा बस्ती, शर्मा बगान, पार्वती घाट, रमनी फ्लैट पुलिया, रिफ्यूजी कॉलोनी, शिव सिंह बगान के नाले शामिल हैं। इस दौरान पार्वती घाट एवं रिफ्यूजी कॉलोनी स्थित बड़े नाले की विशेष सफाई में टाटा स्टील यूआईएसएल की टीम द्वारा नाले के किनारे अवैध निर्माण एवं नाले के जाम को खोलने के लिए विशेष कदम उठाए गए। सफाई का कार्य आगे भी जारी रहेगा। मौके पर टाटा स्टील यूआईएसएल के आर के चौधरी एवं सहियोगी अधिकारी, जमशेदपुर अक्षेस के नगर प्रबंधक क्रिस्टीना कच्छप, स्वच्छता निरीक्षक पी कुजूर एवं स्वच्छता पर्यवेक्षकों मौजूद थे।

भाजमो ने बारीडीह में मनायी जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद की जयंती

JAMSHEDPUR: भारतीय जनतंत्र मोर्चा जमशेदपुर महानगर के तत्वाधान में देश के प्रखर राष्ट्रवादी नेता एवं भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती समारोह बारीडीह विधानसभा कार्यालय में मनायी गई। सभी उपस्थित कार्यकताओं ने डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर एवं पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। भाजमो जिलाध्यक्ष सुबोध श्रीवास्तव ने कहा कि डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत में दो निशान, दो प्रधान एवं धारा 370 का पुरजोर विरोध किया और इसी के तहत उन्होनें बिना परमिट के कश्मीर में प्रवेश किया जहां प्रवेश करने पर उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। जेल में ही उन्होंने अपना बलिदान दे दिया। आज उन्ही के प्रेरणा से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में धारा 370 हटाया गया। आज कश्मीर में तिरंगा शान से लहरा रहा है। देश हमेशा डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को याद रखेगा। कार्यक्रम में यह लोग थे मौजूद कार्यक्रम में केंद्रीय उपाध्यक्ष रामनारायण शर्मा, कुलविंदर सिंह पन्नू, एम चंद्रशेखर राव, विकाश गुप्ता, मंजू सिंह,अमित शर्मा, राजेश मुखी, काकुली मुखर्जी, कैलाश झा, विनोद यादव, शकर कर्मकार, जयप्रकाश सिंह, मांकेश्वर चौबे, राघवेन्द्र प्रताप सिंह, शमसाद खान, विकाश कुमार, पुतुल सिंह, त्रिलोचन सिंह, शिम्मी कच्छप, रेखा महानंदी, सरस्वती खमरी, दुर्गा प्रसाद, कामेश्वर निषाद, संजय कालिंदी, राहुल कुमार, मयंक कुमार, जितेंद्र कुमार, गणेश चंद्र, सुलोचना देवी, महुआ चक्रवर्ती, रंजिता राय, गीता कुंडू, यमुना देवी इत्यादि बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विकाश गुप्ता एवम धन्यवाद काकुली मुखर्जी ने किया।

कुड़मी युवा संघर्ष मंच ने ग्राम जागरण सभा सह झंडा अभियान किया शुरू

CHAKULIYA: चाकुलिया प्रंखड की सिमदी पंचायत अंतर्गत सिमदी गांव में कुड़मी युवा संघर्ष मंच द्वारा गुरुवार की शाम को ग्राम जागरण सभा सह झण्डा अभियान की शुरूआत की गयी। मौके पर अनिर्वान सिंहराय, शुभदीप महतो, प्रद्युत महतो, जितेन महतो, धनंजय महतो, राकेश महतो, प्रबीर महतो, हेमंत महतो, विकाश महतो, सूरज महतो, भाग्यवती महतो, सुचित्रा महतो, अंजली महतो, मोनी महतो, राजेश महतो, सुषेण महतो उपस्थित थे।

औद्योगिक विकास में समस्याएं नहीं बनेंगी बाधक, जल्द होगा समाधान : उद्योग सचिव

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR: कोल्हान क्षेत्र में औद्योगिक विकास में जन समस्याएं बाधक नहीं बनेंगी। सभी समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान होगा। उक्त आश्वासन गुरूवार को सिंहभूम चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री सभागार में झारखंड के उद्योग सचिव जितेन्द्र सिंह ने दिया। वे चैंबर से जुड़े उद्यमियों के साथ औद्योगिक विकास पर परिचर्चा कर रहे थे। मौके पर टीएसयूआईएसलएल (पूर्व में जुस्को) के प्रबंध निदेषक रितुराज सिन्हा, प्रणव कुमार पॉल, संयुक्त निदेषक, उद्योग झारखण्ड सरकार, जेबीवीएनएल जमषेदपुर के महाप्रबंधक, जेबीवीएनएल चाईबासा के उप-महाप्रबंधक, उप-श्रमायुक्त, महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र, विद्युत अधीक्षक अभियंता, विद्युत अभियंता भी समेत अन्य उपस्थित थे। उद्योग सचिव ने कहा कि उद्योग विभाग इंटरवेंशन पॉलिसी के माध्यम से लगातार उद्यमियों की समस्याओं से अवगत होता रहता है और इसे दूर करने की हमारी कोशिश करता है।

सिंहभूम चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री सभागार में बैठक में मौजूद लोग।

संगल बिंडो सिस्टम से 88 हजार समस्याओं का हुआ निदान

सिंगल विन्डो के माध्यम सरकार के पास एक लाख से अधिक आवेदन आये उनमें से लगभग 88 हजार आवेदनों को पास किया गया। पिछले सौ वर्षों के दौरान नेचुरल रिसोर्सेस के कारण जमशेदपुर इंडस्ट्रीयल हब गया है। झारखण्ड सरकार के द्वारा वर्ष 2015 में फूड पॉलिसी लाई गई इससे इस क्षेत्र में उद्योग धंधे राज्य में स्थापित हुए। उसी तरह वर्ष 2016 में नई टेक्सटाईल पॉलिसी लाई गई। जिसके तहत कपड़ों का निर्माण झारखण्ड में होने लगा। जो यहां से यूरोपियन देशों को एक्सपोर्ट हो रहा है। अभी इलेक्ट्रीकल वेहिकल पॉलिसी लाई गई है। झारखण्ड सरकार द्वारा नई एमएसएमई डेवलपमेंट पॉलिसी लाई गई है। जिसके तहत नये एमएसएमई ईकाई को तीन वर्षों तक निबंधन कराने से छूट दी जायेगी। औद्योगिक विकास हेतु सरकार द्वारा फार्मास्यूटिकल पॉलिसी लाई गई है। उन्होंने कहा टाटा मोटर्स एवं रेलवे के साथ इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट के लिये स्थानीय उद्योगों को प्राथमिकता दे इसके लिये चैम्बर को उनसे वार्ता करनी चाहिए।

बिजली वितरण का एप्रूवल की प्रक्रिया आसान हो– रितूराज

इस अवसर पर उपस्थित टाटा स्टील यू।आई.एस.एल. (जुस्को) के प्रबंध निदेशक रितुराज सिन्हा ने कहा आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र में उद्योगों को बिजली वितरण के दौरान झारखण्ड सरकार से एप्रूवल लेने काफी परेषानियों का सामना करना पड़ता है. जिससे सभी उद्योगों को बिजली देना संभव नहीं हो पा रहा है। एप्रूवल लेने की प्रक्रिया को आसान बनाया जाय।इस अवसर पर एसिया के अध्यक्ष इंदर अग्रवाल ने कहा कि पाल्यूशन कंट्रोल बोर्ड द्वारा जारी किये जाने वाले सीटीई जो पांच साल के लिये जारी किया जाता है। उसे छः महीने या एक साल के लिये ही नवीकरण किया जाता है जो कि गलत है। इसे पांच साल के लिये रेनेवल किया जाना चाहिए। स्ट्रीट लाईट के मद में जियाडा द्वारा लिया जाने वाला वार्षिक शुल्क नहीं लिया जाना चाहिए इसे सरकार द्वारा स्वयं से लगाया जाना चाहिए।

परिचर्चा में यह उद्यमी थे मौजूद

इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष सुरेश सोंथालिया, यूएन शुक्ला, अभिषेक नरेडी, श्याम शर्मा, संजय साह, संजय साह, अभिजीत बनर्जी, गौरव सिंघल, अरूण गोयल, नरेन्द्र श्राफ के अलावा काफी संख्या में उद्यमीगण उपस्थित थे।

ऑल इंडिया फेयर प्राइस शॉप डीलर फेडरेशन के बैनर तले सुंदरगढ़ के डीलरों नें किया धरना-प्रदर्शन

PHOTON NEWS RAURKELA: राउरकेला महानगर निगम कार्यालय के समक्ष ऑल इंडिया फेयर प्राइस शॉप डीलर फेडरेशन के बैनर तले सुंदरगढ़ के डीलरों नें धरना प्रदर्शन किया। ऑल इंडिया डीलर फेडरेशन के पूर्व अध्यक्ष दत्ताहरी सामाल नें कहा कि कोरोना काल के समय 28 महिना लोगों को मुफ्त चावल बांटनें का काम डीलरों नें किया लेकिन उन्हें अब तक कमीशन नहीं मिला है। इसे लेकर भुवनेश्वर में कुछ महीने पूर्व धरना प्रर्दशन किया गया था ताकि इन डीलरों का हक उन्हें मिले। भुवनेश्वर के धरना प्रर्दशन के बाद डीलरों के बैंक खाते में 6 महिनें का कमीशन डाला गया, इसके बाद 22 महीनें का कमीशन अबतक बाकी है। सरकार इसे देनें का नाम नहीं ले रही है। साथ ही डीलरों नें जनवरी 2023 से जून 2023 तक मुफ्त चावल लोगों में वितरण किया। कोरोना काल के दौरान स्कूली बच्चो को मिड डे मिल की जगह चावल वितरण किया जा रहा था और लोगों में एलईडी बल्ब भी बांटे गए। इन सभी का कमीशन अबतक डीलरों के खाते में नहीं आया हैं। जिसे लेकर समस्त ओड़िशा में जिलापाल व अतिरिक्त जिलापाल के कार्यालय के समक्ष डीलर फेडरेशन धरना प्रर्दशन कर बकाया कमीशन और स्वास्थ कार्ड बनाने को लेकर मांग कर रहा है। महानगर निगम कार्यालय के पास धरना में सुंदरगढ़ डीलर फेडरेशन के अध्यक्ष रंजीत नायक, करुणाकर प्रहराज, दिलिप कुमार दास, अमिताब ढल,नारायण प्रधान, अफताब अली खान, दिलिप कुमार जेना, गंगाधर नंदी, लखिमप्रिया नाथुन, लखिमप्रिया बेहरा, रेणुबाला मल्लिक, आनंत कुमार सामल, दिलिप कुमार बुद्धदेव, सुरेंद्र कुमार दास, त्रिमणी धर, शारदा पटनायक, निराकर नायक, रेणुबाला राय, कृष्णा साहु, असीमकुमार बिस्वाल समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

धरना प्रर्दशन करते डीलर • फोटोन न्यूज

टिनी राय प्ले स्कूल पर तीन साल के बच्चे की पिटाई का आरोप

अभिभावकों ने प्रिंसिपल के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करायी

PHOTON NEWS RAURKELA: निजी स्कूलों द्वारा बच्चों को अलग अलग तरह से प्रताड़ित करने का मामला लगातार सामने आ रहा है। इसकी क्रम में कदमा थाना अंतर्गत शास्त्री नगर स्थित टिनी टॉय प्ले स्कूल पर 3 साल के बच्चे के साथ मारपीट का आरोप लगा है। बच्चे के परिजनों ने कदमा थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराते हुए स्कूल प्रिंसिपल के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। हालांकि स्कूल प्रबंधन ने अभिभावकों के आरोप को सीरे से खारिज कर दिया है वहीं जानकारी मिलते ही अभिभावक संघ के अध्यक्ष डॉ उमेश कुमार पीड़ित बच्चे और उसके परिजनों के साथ कदमा थाना पहुंचे और इस संबंध में परिजनों द्वारा लिखित शिकायत थाने में स्कूल प्रबंधन के खिलाफ दर्ज करवाई है।

अभिभावकों का यह है आरोप:

इस पूरे घटना की जानकारी देते हुए छात्र की मां पूजा शुक्ला ने बताया कि उनका बेटा अथर्व 3 साल का है और टिनी टॉय प्ले स्कूल में पढ़ता है। किसी बात को लेकर मंगलवार को स्कूल में स्कूल की शिक्षिका ने 3 वर्षीय अथर्व की बेरहमी से पिटाई कर दी इस संबंध में परिजनों द्वारा स्कूल प्रबंधन से पूछे जाने पर स्कूल प्रबंधन ने मामले को रफा-दफा करने की कोशिश की इतना ही नहीं स्कूल में लगे सीसीटीवी कैमरे में छेड़छाड़ कर घटना वाला वीडियो ही डिलीट कर दिया थक हार कर उनके द्वारा कदमा थाने में शिकायत दर्ज कर कार्रवाई की मांग की जा रही है

पुलिस ने प्रिंसिपल को थाना बुलाकर ली जानकारी

अभिभावकों द्वारा लिखित शिकायत दर्ज करने के बाद पुलिस ने परिजनों के साथ साथ स्कूल की प्राचार्य को भी थाने में बुलाकर जांच पड़ताल शुरू कर दी स्कूल की प्राचार्य रेखा गुप्ता ने कहा कि उनकी और उनके स्कूल पर लगाया जा रहा आरोप बेबुनियाद हैं। उन्होंने कहा कि वे जांच में हर तरह से सहयोग करने के लिए तैयार हैं। वहीं पुलिस की मानें तो मामले की जांच चल रही है।

नवयुवक कांवरिया संघ के 51 सदस्य बाबा धाम रवाना

PHOTON NEWS RAURKELA: नवयुवक कांवरिया संघ राउरकेला की ओर से आज 51 कांवरियों का जत्था राउरकेला रेलवे स्टेशन से जयनगर एक्सप्रेस से रवाना हुआ। शाम 5:00 बजे ट्रेन राउरकेला से खुली वही कावरिएं सुल्तानगंज उतर कर जल लेकर शुक्रवार को सुल्तानगंज से झारखंड बाबा धाम के लिए रवाना होंगे। 12 तारीख को बाबा धाम में जल अर्पण करेंगे। इस पांच दिवसीय दौरे को लेकर कांवरियों का जत्था चंदन अग्रवाल ,सोमती अग्रवाल, सांवर अग्रवाल के नेतृत्व में रवाना हुआ। पिछले कई वर्षों से नवयुवक कांवरिया संघ हर साल बाबा धाम सावन मास में कांवर चढ़ाने के लिए जाते हैं। इस टोली में राउरकेला समेत बिलासपुर ,राजगांगपुर ,विरमित्रपुर, बिसरा समेत आसपास अंचलों से कांवरियों का जत्था बाबा धाम जाता है ज्ञात हो कि 13 तारीख को वापस 51 कांवरियों का जत्था साउथ बिहार एक्सप्रेस ट्रेन से राउरकेला वापस आएंगे।

रोटरी क्लब ऑफ राउरकेला सेंट्रल नें चलाया पौधरोपण अभियान

अभियान में 200 से अधि पौधे लगाए गए

PHOTON NEWS RAURKELA: रोटरी कल्ब ऑफ राउरकेला सेंट्रल नें शहर को हरा-भरा,मौसम में लगातार परिवर्तन और भीषण गर्मी से बचनें के उद्देशय से सोमवार को पौधारोपण अभियान चलाया.बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम के गेट नंबर-1 के पास तकरीबन 200 से अधिक पिपल,क्रमचंद,करमेनलिया ग्रीन समेत अन्य पौधे लगाए. अभियान में लोगों को पौधारोपण के प्रति जागरुक करने के साथ ही पौधारोपण से स्वास्थ के फायदे भी गिनवाए गए.इसके अलावा पौधारोपण से भविष्य तो बेहतर होगा और पर्यावरण भी साफ सुथरा और हरा रहेगा इसकी जानकारी कार्यक्रम में शामिल लोगों को दी गई.कार्यक्रम का आयोजन पूर्व अध्यक्ष भगवान पति के द्वारा कि गई. इस दौरान रोटरी कल्ब ऑफ राउरकेला के अध्यक्ष अब्दुस सलाम,सचीव विकास पांडेय,जिला गर्वनर मंजीत सिंह अरोड़ा, मलिंदर कौर, डीएफओ, राउरकेला रेंज फॉरेस्ट ऑफिसर, ब्रजेश गुप्ता, राजेश अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल, नरेंद्र केड़िया, बिश्वजीत पति, रवी दास, अभिषेक मित्तल, बरखा, संगीता ज्योती, डॉ दिप्ती, अंजली पति समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

पौधारोपण अभियान में शामिल रोटेरियन।

पत्नी ने 500 रुपये नहीं दिए तो पति ने लगा ली फांसी, कीताडीह की घटना

घटनास्थल पहुंचकर जांच करती पुलिस।

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR: परसुडीह थाना क्षेत्र के कीताडीह गाढ़ीवान पट्टी में गुरुवार को एक 23 वर्षीय युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृत युवक का नाम सुमित कालिंदी है। बताया जाता है कि पत्नी के द्वारा 500 रुपया नहीं दिए जाने को लेकर दोनों पति पत्नी के बीच झगड़ा हुआ, जिस वजह से फांसी लगाकर आत्म हत्या कर ली। सुमित ने बांस के सहारे फांसी लगाई। वहीं सूचना पाकर परसुडीह थाना प्रभारी राम कुमार वर्मा घटना स्थल पर पहुंचे और मामले की जांच की। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस की मानें तो पारिवारिक विवाद में यह घटना हुई है। लेकिन दुसरे पहलुओं पर भी जांच की जा रही है। वहीं आस पास के लोगों ने बताया कि अक्सर पति पत्नी के बीच लड़ाई होती रहती थी। कभी कभी मारपीट तक दोनों कर लेते थे।

गुणात्मक शोध के लिए रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेल का हुआ गठन

जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी के पहले पीएचडी एंट्रेस टेस्ट का परिणाम जारी, 66.6 प्रतिशत छात्राएं हुई सफल

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR: वीमेंस यूनिवर्सिटी रिसर्च एंट्रेंस टेस्ट (जेडब्ल्यूयूआरइटी)-2023 का परिणाम जारी कर दियाहै। कोल्हान क्षेत्र के साथ पूरे झारखंड की उच्च शिक्षा में पीएचडी करने को इच्छुक महिला अभ्यर्थियों को इस परिणाम का इंतजार था। विदित हो कि इस पीएचडी एंट्रेंस टेस्ट में कुल 90 अभ्यर्थी शामिल हुई थी। परिणाम में 60 अभ्यर्थियों को टेस्ट सी के लिए सफल घोषित किया गया है। इस चरण में इन्हें सिनॉप्सिस प्रस्तुतिकरण और मौखिक परीक्षा का सामना करना होगा। कुलपति प्रो.(डॉ.) अंजिला गुप्ता ने बताया कि जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी में पीएचडी शुरू करना इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि आसपास के कुछ राज्यों की यह पहली वीमेंस यूनिवर्सिटी है। पीएचडी में महिलाओं की भागीदारी राष्ट्रीय स्तर पर मात्र 16.6 प्रतिशत है तो झारखंड के जनजातीय बहुल क्षेत्र की महिलाओं की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। क्षेत्र की महिलाएं उच्च शिक्षा के लिए आज भी संघर्ष कर रही हैं। यदि महिला विश्वविद्यालय में पीएचडी के लिए शुरूआत होती है तो यह सीधे-सीधे महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाता है। साथ ही, झारखंड के जनजातीय छात्राओं का प्रतिनिधित्व कर रहा यह विश्वविद्यालय यहां की छात्राओं को पीएचडी के लिए उच्चस्तरीय सुविधा प्रदान करने को प्रतिबद्ध है। इसके लिए रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेल का गठन किया गया है जो गुणात्मक शोध को भी सुनिश्चित करेगी। कुलपति ने रिसर्च एडवाइजरी कमिटी (आरएसी), पीएचडी एंट्रेंस के लिए बनी कमेटी एवं परीक्षा विभाग को भी इस संबंध में पूरे वर्ष त्वरित गति से कार्य करने और पीएचडी एंट्रेंस टेस्ट का शीघ्र परिणाम घोषित करने के लिए बधाई दिया है।

प्रथम जेडब्ल्यूयूआरइटी 2023 के लिए रिकॉर्ड संख्या में 29 मेधावी अभ्यर्थियों ने आवेदन किया

यूनिवर्सिटी के लिए एक महत्वपूर्ण और उत्साहजनक बात यह रही कि छूट प्राप्त अभ्यर्थियों की संख्या 29 थी। यह संख्या उन मेधावी अभ्यर्थियों की होती है जो नेट या जेआरएफ या एमफिल कर चुकी होती है। क्षेत्र के अन्य विश्वविद्यालयों से तुलना करने पर यह कहा जा सकता है कि यह एक रिकॉर्ड संख्या है क्योंकि एक साथ इतने मेधावी अभ्यर्थियों ने कहीं भी आवेदन नहीं किया था। यह सभी महिला अभ्यर्थी पीएचडी एंट्रेंस टेस्ट में उत्तीर्ण 60 अभ्यर्थियों के साथ सीधे सीधे टेस्ट में सहभागी बनेंगी अर्थात प्रथम जेडब्ल्यूयूआरइटी-2023 में कुल 89 अभ्यर्थी टेस्ट में शामिल होंगी। यूनिवर्सिटी ने पीएचडी एंट्रेंस टेस्ट के परिणाम घोषित होने और औपचारिक रूप से इसकी शुरूआत से पहले ही गुणात्मक शोध को लेकर प्रयास शुरू कर दिया है। चेयरपर्सन कुलपति प्रो अंजिला गुप्ता एवं डायरेक्टर डॉ. सुधीर कुमार साहू के नेतृत्व में रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेल का गठन शोध से जुड़े बहुत सारे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया गया है। इसके द्वारा पीएचडी छात्राओं की सामान्य कठिनाइयों से लेकर विभिन्न औद्योगिक समूहों और उच्च स्तरीय तकनीकी संस्थानों से जुड़कर शोध परियोजनाओं के हिस्सा बनने तक का कार्य किया जाएगा। यूनिवर्सिटी ने इसके लिए कई संस्थानों और औद्योगिक समूहों से एमओयू किए हैं, जिनकी सहायता से यह सेल छात्राओं के गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य को सुनिश्चित करेगा। स्कॉलर्स को उच्चस्तरीय प्रयोगशाला सुविधा के साथ शोध के अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर पैकेज उपलब्ध कराया जाएगा। उदाहरण के लिए यूनिवर्सिटी ने शोध में साहित्य चोरी रोकने के लिए पहले से ही एंटीप्लेगरिज्म सॉफ्टवेयर आवरिजिनल उपलब्ध करा दिया है।

चोरी के मामले में 3 नाबालिग गिरफ्तार

PHOTON NEWS RAURKELA: रघुनाथपल्ली थाने की पुलिस ने 6 लाख रुपये कीमत का चोरी का मोबाइल फोन जब्त किया है। पुलिस ने चोरी में शामिल एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि तीन नाबालिगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। चोरी 29 जून की रात पानपोष के तारिणी मार्केट में पीसी ज्ञालारी मोबाइल दुकान में हुई थी। बदमाशो ने दुकान का रोशनदान तोड़कर दुकान में दाखिल हुए। उन्होंने दुकान से 7 लाख रुपये के मोबाइल फोन और इलेक्ट्रॉनिक सामान चोरी कर लिया। इस संबंध में 30 जून की सुबह दुकान मालिक ललित पटेल ने रघुनाथपाली थाने में एफआईआर.दर्ज करवाए। पुलिस ने जांच कर छह लाख रुपये कीमत का मोबाइल फोन जब्त कर लिया। इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है ,और 3 नाबालिगों को हिरासत में लिया गया है।उनसे पूछताछ चल रही है।

बाढ़ के पानी में बहा 18 लाख में बना डायवर्सन

स्थानीय का आरोप- कंपनी की लापरवाही से टूटा, कंपनी ने कहा- अतिक्रमण की वजह से निर्माण में हुई देरी

दरभंगा । शंकर लोहार से सिसौनी हो रहे पथ निर्माण के बीच कोणी घाट के पास निमार्णाधीन पुल का निर्माण अचानक कमला बलान में बाढ़ का पानी आ जाने से रुक गया है। इस जगह पर पूर्व से निर्मित पुल को सड़क निर्माण कंपनी के द्वारा तोड़ दिया गया था। लोगों के आवाजाही के लिए एक डायवर्सन का निर्माण किया गया था जो डायवर्सन बीती रात नदी की तेज धार में बह गया जिसके बाद वहां का आवागमन ठप हो गया है लोगों को 200 मीटर की दूरी तय करने के लिए अब 8 से 10 किलोमीटर घूम कर जाना पड़ता है। क्योंकि यहां पर अभी तक कोई सरकारी व्यवस्था या कंपनी की तरफ से कोई भी अल्टरनेटिव नहीं तैयार किया गया है। लोगों का कहना है कि डायवर्सन के नीचे पानी के बहाव के लिए सीमेंट की बनी दो पाइपों को रखा गया था जिसे कंपनी ने जेसीबी से हटवा लिया जिससे यहां का डायवर्सन क्षतिग्रस्त हो गया अगर वह ना हटाया जाता तो डायवर्सन जस का तस बना रहता वही कंपनी का कहना है कि अचानक से उनकी लाखों की संपत्ति का नुकसान हुआ है और वहां पर अधिक नुकसान ना हो इसके लिए सीमेंट के पाइप को हटाया गया था। 76 लाख रुपए से निर्मित होने वाली है सड़क की जिम्मेदारी भारतीय इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को दी थी यह टेंडर 2021 में हुआ था जिसका पूरा करने का समय 2024 के मार्च तक दिया गया है। इस पुल निर्माण के मुंशी मणि भूषण कुमार ने बताया कि अचानक दो-तीन दिनों से पानी बढ़ने लगा था और अचानक बुधवार की रात 7:00 बजे तेज

रफ्तार पानी की धार ने इसे तोड़ दिया आगे उन्होंने बताया कि इस पुल का निर्माण जून 2022 से किया जा रहा है उन्होंने पुल निर्माण के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यहां है हेवी लोडेड पुल का निर्माण करना है यह टोटल ब्रिज की लंबाई 54 मीटर की है और एक पिलर बनाने में 73 फीट 22 मीटर नीचे खुदाई करना पड़ता है उसके बाद नीचे वेल केप बनाना पड़ता है। उन्होंने आगे बताया कि इस डायवर्सन के निर्माण में 17 से 18 लाख का खर्च आया था आगे उन्होंने पुल निर्माण में हो रही देरी के बारे में बताया कि इस सड़क की कुल लंबाई 21.9 किलोमीटर है और इस सड़क पर इतना ज्यादा अतिक्रमण है उनका आरोप है कि यहां ग्रामीणों के द्वारा पुल निर्माण में इतनी दिक्कतें दी गई कि जिससे यह प्रोजेक्ट समय से पीछे चल रहा है अगर ऐसा नहीं होता तो डिपार्टमेंट के हिसाब से इस काम को पूरा कर लिया गया होता और जहां या पुल निर्माण हो रहा है उस जगह भी तीन से चार महीना अतिक्रमण का सामना करना पड़ा है उन्होंने आगे बताया कि अभी भी कुछ जगहों पर अतिक्रमण है ही यहां के स्थानीय नेताओं से पुल निर्माण की कंपनी ने बात करा जिसके बाद भी कोई पहल नहीं हुआ। वही वहां के स्थानीय कमलेश राय ने बताया कि या डायवर्सन इस इलाके के लोगों के लिए लाइफलाइन था यहां ग्रामीणों की मांग पर अप्रोचिंग पुल का निर्माण किया जाना था लेकिन उससे पहले ही बाढ़ के पानी आ जाने से सब कुछ समाप्त हो गया आगे उन्होंने बताया कि यह जो कुछ भी दुर्दशा यहां पर है वह विभागीय लापरवाही है जिस समय में बाढ़ की समस्या नहीं थी उस समय में कंपनी ने विशेष ध्यान नहीं दिया। उन्होंने बताया कि पुल के कर्मचारियों के द्वारा जेसीबी से सीमेंट के पाइप को निकाल लिया गया जिसके कारण यह बांध टूट गया और आज यहां की लोगों की ऐसी दुर्दशा है अतिक्रमण की बात पर उन्होंने बताया कि अतिक्रमण से कुछ ज्यादा समस्या नहीं है और इस वजह से पुल निर्माण में कोई परेशानी नहीं है और अगर अतिक्रमण है अभी तो यह विभाग का दायित्व था इसे पूरा क्यों नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि स्कूल के डायवर्सन के टूट जाने से बगल में हो रहे घाट निर्माण भी प्रभावित हुआ है जिससे 10 लाख रुपए का नुकसान यहां के लोगों को हुआ है

उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक लूटकांड मामला: एसआईटी टीम गठित, दो संदिग्धों को उठाया, बसवारी से की थी रेकी

मुजफ्फरपुर । मीनापुर थाना क्षेत्र स्तिथ गोरिगामा मे उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक से 9.43 लाख लूटकांड मामले में पुलिस जांच तेज हो गई है। मामले की जांच के लिए अलग से एसआईटी टीम गठित की गई है। इसके अलावा, पटना एसटीएफ की टीम भी जांच करने पहुंची। पुलिस ने इलाके से दो संदिग्ध को भी उठाया है। उससे गोपनीय स्थान पर रखकर पूछताछ की जा रही है। बताया जा रहा कि लूट से पहले 100 मीटर सामने पूरब के बँसवारी मे पल्सर सवार अपराधियों ने रेकी की थी। वहां से अपाचे पर सवार दो युवक बैंक मुआयना करने के बाद वहां पहुंचे थे। इसके बाद अपराधी एक बाइक पर पहुंच कर लूट की घटना को अंजाम दिया। वहीं, थानेदार राजेश कुमार के नेतृत्व में मीनापुर पुलिस व डीआइयू ने बैंक परिसर की स्थिति का जायजा लिया। बैंक प्रबंधन को बाहर में बढिया सीसीटीवी कैमरा लगाने का निर्देश दिया गया। साथ ही बैंक मैनेजर को आपात स्थिति में सायरन बजाने का मॉक ड्रिल कराया गया। थानाध्यक्ष राजेश कुमार ने बताया कि शाखा प्रबंधक ब्रह्मदेव वर्णवाल के बयान पर नौ लाख 43 हजार रुपए लूट की प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है। शाखा प्रबंधक ने एफआईआर में तीन अपराधियों के बैंक में घुसने का जिक्र किया है। बँसवारी मे अपराधियो की जुटने की पुष्टि पुलिस भी कर रही है। बताया जा रहा है की दिनदहाड़े बैंक लूट के बाद बैंक नियत समय पर खुला। लेकिन अपराह्न 3 बजे के बाद तक भय के कारण एक भी ग्राहक बैंक नहीं पहुंचा। जबकि शाखा प्रबंधक ब्रह्मदेव बर्णवाल, कैशियर संजय कुमार पाल अपनी कुर्सी पर कार्यरत थे। वहीं बैंक मित्रा कृष्णा देवी बरामदे में तथा चौकीदार महादेव राय अपने ड्यूटी पर तैनात दिखे।

दरवाजे पर बात कर रहे 2 लोगों पर ताबड़तोड़ फायरिंग

गोपालगंज। नगर थाना क्षेत्र के तुरकान्हा टोला गांव में गुरुवार की सुबह बाइक सवार बदमाशों ने घर के दरवाजे पर बात कर रहे दो लोगों पर गोली चला दी। प्रॉपर्टी डीलर समेत दो लोग जख्मी हो गए। एक व्यक्ति की स्थिति गंभीर बनी हुई है। परिजनों ने स्थानीय लोगों की मदद से इलाज के लिए गंभीर व्यक्ति को गोपालगंज सदर अस्पताल में भर्ती कराया है। स्थिति को गंभीर देखते हुए बेहतर इलाज के लिए गोरखपुर रेफर कर दिया गया है। जख्मियों में तुरकान्हा टोला गांव निवासी 50 वर्षीय राजेश यादव और 51 वर्षीय संजय पांडेय शामिल हैं। जख्मी राजेश यादव अपने घर के पास संजय पांडेय से बात कर रहे थे। इसी दौरान मौके पर दो बाइक पर सवार चार की संख्या में पहुंचे बदमाशों ने गोली चला दी। फायरिंग के दौरान राजेश यादव के पेट और हाथ में गोली लगी है जबकि संजय पांडे की पीठ को छूते हुए गोली निकल गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। संजय पांडेय ने बताया कि राजेश पांडेय अपने घर के दरवाजे पर उनसे बात कर रहे थे तभी हमलावरों ने गोली चला दी।

वीरान में गर्लफ्रेंड के क्वालिटी टाइम ऑफर पर फिदा होकर खतरे में डाली जिंदगी, 50 लाख मांगी

पटना। बिहार में हनी ट्रैप के जरिए एक युवक को अगवा किया गया। अपराधियों ने उसे छोड़ने के लिए 50 लाख की फिरौती मांगी। युवक को गया से पटना लाया गया। उसे गर्दनीबाग इलाके के एक फ्लैट में रखा गया। गया पुलिस ने पटना पुलिस और रळ्ऋ की मदद से बरामद कर लिया। साथ ही मास्टरमाइंड प्रीतम कुमार और लड़की समेत 4 लोगों को पकड़ लिया। पुलिसिया पूछताछ में जो चीजें सामने आई वह चौंकाने वाले थे। पुलिस ने बताया कि कहानी की शुरूआत इंस्टाग्राम से होती है। गया के बेलागंज निवासी ऋषभ कुमार (20) को इंस्टाग्राम पर प्रिया नाम की लड़की से दोस्ती हुई। दोनों में बातचीत बढ़ने लगी। इस दौरान दोनों एक-दूसरे के करीब आए। ऋषभ लड़की के बुलाने पर उससे मिलने

पटना भी आ गया। कुछ दिन बाद लड़की फिर से उसे पटना बुलाने लगी। इस बार वह कुछ कारण से नहीं आया पाया। इसके बाद लड़की फिर से पटना आने की जिद करने लगी। 30 जून को ऋषभ उससे मिलने पटना आया। लड़की ने उसे सुनसान जगह पर मिलने बुलाया। ऋषभ उससे मिलने गया तो उसका अपहरण कर लिया गया। पुलिस के अनुसार, ऋषभ ने बताया कि उसे एक फ्लैट पर हाथ-पैर बांधकर रखा गया था। वह भागने की कोशिश न करे इसके लिए अपराधी उसे इंजेक्शन देकर बेहोश कर देते थे। ऋषभ ने बताया कि 30 जून को लड़की से मिलने अपने तीन दोस्तों के साथ संपतचक गया था। इसके बाद लड़की ने उससे कहा कि वह उसके साथ अकेले में क्वालिटी टाइम स्पेंड करना चाहती है। इसलिए अपने दोस्तों को यहां से जाने कहो। इसके बाद लड़की उसे सुनसान जगह पर लेकर गई। यहां पर तीन नकाबपोश मौजूद थे। जब तक मैं कुछ समझ पाता तीनों ने मुझे पकड़ लिया और इंजेक्शन देकर बेहोश कर दिया। इसके बाद जब मेरी आंख खुली तो मेरे हाथ-पैर बंधे हुए थे। पता चला कि मुझे अगवा कर लिया गया है। पुलिस के अनुसार, ऋषभ के पिता ने बेलागंज थाने में अपहरण की प्राथमिकी दर्ज करवाई थी। इसके बाद उसे खोजने के लिए स्पेशल टीम का गठन किया गया। छानबीन के दौरान हमलोग उसे लास्ट लोकशन पर पहुंचे लेकिन वह नहीं मिला। इसके बाद ऋषभ के सोशल मीडिया अकाउंट को खंगाला तो पता कि वह इंस्टाग्राम पर किसी लड़की से चैट करना था।

अंतरजिला चोर गिरोह का भंडाफोड़

सीमांचल । सरकारी स्कूलों में चोरी की घटना को अंजाम देने वाले अंतरजिला चोर संगठित गिरोह के 5 शातिर चोरों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। शातिर चोर पूर्णिया, किशनगंज, अररिया और कटिहार के सरकारी स्कूलों को टारगेट करते थे। और फिर स्कूल का ताला तोड़ स्कूल में रखा सारा सामान लेकर भाग निकलते थे। शातिर चोरों के पास से इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस ,कुर्सियां यहां तक की बच्चों की थाली तक साथ ले जाते थे। वहीं इन शातिर चोरों के पकड़े जाने के बाद एक साथ 9 लंबित मामलों की गुत्थी को पुलिस ने सुलझा लिया है। घटना के संबंध में सदर एसडीपीओ पुष्कर कुमार ने बताया कि एसपी आमिर जावेद को लगातार शिकायत मिल रही थी, कि कुछ चोर संगठित गिरोह

बनाकर मुख्य रूप से सरकारी स्कूलों का ताला तोड़कर चोरी की घटना को अंजाम देते हैं। जिसके बाद शातिर चोरों तक पहुंचने के लिए एसपी आमिर जावेद ने उनके नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया। जिसमें कसबा थानाध्यक्ष चन्द्रभूषण , अमित कुमार, आयुष राज, शैलेश कुमार सिंह, सुमन कमारी, शबाना आजमी, देव कुमार यादव को शामिल किया गया। जिसके बाद पुलिस ने गुप्त रेड करते हुए शातिर चोरों को धर दबोचा। पुलिस के हत्थे चढ़े अंतरजिला चोर गिरोह के सदस्यों में अररिया जिले के रहने वाले मो मनोवर, मो0 फिरदौस और मो0 मैराज शामिल हैं। वहीं गिरोह के दो अन्य सदस्य गुड्डू उर्फ तनवीर आलम और मो0 आसिफ आलम पूर्णिया का ही रहने वाला है। पकड़े गए चोरों के पास से 3 एलईडी टीवी, 2 मॉनिटर , सीपीयू और प्रिंटर, एक बैट्री, इनवर्टर, होम थिएटर, सोलर प्लेट, सोलर लाइट, सोलर बैट्री, 3 स्ट्रीट लाइट, यूपीएस, माउस और डाटा केवल के अलावाप्लास्टिक, रोलिंग और स्टील की कुर्सियां, 4 मोबाइल, गैस सिलेंडर यहां तक की बच्चों की थाली तक बरामद हुई है। वहीं इन शातिर चोरों के पकड़े जाने के साथ ही जिले के कसबा थाना, अमौर, जलालगंढ़ और किशनगंल जिला के कोचाधामन थाना में लंबित सरकारी विद्यालयों से जुड़ी चोरी के एक साथ 9 मामले सुलझा लिए गए हैं।

संक्षिप्त डायरी

बिहार सरकार के मंत्री के विरोध के बाद केके पाठक ने लिया आदेश वापस, टोला सेवकों को राहत

पटना। बिहार सरकार के मंत्री रत्नेश सदा ने जिस बात का विरोध किया तो और शिक्षा विभाग के अपर विशेष सचिव केके पाठक को खरी-खोटी सुनाई थी, उसे वापस ले लिया गया है। अब शिक्षा विभाग द्वारा एक नया आदेश जारी किया गया है। इसमें टोला सेवकों को राहत दी गई। बता दें कि टोलासेवकों को अपने इलाके के 90 फीसदी बच्चों को स्कूल तक पहुंचाने की बात कही गई थी। इसमें असमर्थ होने पर 25 फीसदी सैलरी काटने की बात कही गई। इसके बाद बिहार सरकार के मंत्री रत्नेश सदा ने इस पर आपत्ति जताई थी और इससे मामले की शिकायत नीतीश कुमार से करने की बात कही थी। मामला तूल पकड़ने लगा तो शिक्षा विभाग ने बच्चों की हाजिरी 90 फीसदी से घटाकर अब 75 फीसदी कर दी गई है। दरअसल, शिक्षा विभाग ने अनुसूचित जाति के टोला सेवकों के मानेदय में 25 प्रतिशत की कटौती का फरमान जारी किया था। इसमें कहा गया था कि जिन शिक्षा सेवक के क्षेत्र में प्राइमरी स्कूलों में पांचवी तक के बच्चों की 90 प्रतिशत उपस्थिति नहीं करवा सकते तो, उनके वेतन में 25 प्रतिशत कटौती की जाएगी। इसके बाद इस आदेश का विरोध होता रहा। अब शिक्षा विभाग ने इसे घटाकर 75 फीसदी कर दिया। बिहार सरकार के मंत्री रत्नेश सदा ने शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव केके पाठक पर जमकर निशाना साधा था। उन्होंने कहा कि केके पाठक दलित विरोधी है। उनका व्यवहार अशोभनीय है और वह मनमानी करते हैं। वह सामंती विचारधारा के लोग हैं और शिक्षा विभाग में आने के बाद अपने विचारधारा को लागू करना चाहते हैं। यही कारण है कि महादलित टोले के शिक्षक जो महादलित के बच्चे को पढ़ाते हैं उसको लेकर नया गाइडलाइन जारी कर उनके वेतन में कटौती के आदेश जारी कर दिया। यह काफी गलत है। उन्होंने कहा कि नब्बे प्रतिशत अगर बच्चे की उपस्थिति नही रहेगी तो महादलित टोले के शिक्षक का वेतन काटा जाएगा। यह फरमान कहीं से उचित नहीं है।

अररिया में संदिग्ध हालत में महिला की मौत

अररिया। नरपतगंज प्रखंड क्षेत्र के फुलकाहा थाना क्षेत्र में बुधवार को एक महिला की संदिग्ध स्थिति में मौत हो गई है। घटना के बाद से ही ससुराल पक्ष के लोग घर छोड़कर फरार हैं। स्थानीय लोगों ने महिला के शव को घर में पड़ा देखा, जिसके बाद महिला के मायके वाले को सूचना दी गई। मृतक की पहचान फुलकाहा थाना क्षेत्र अंतर्गत भंगही पंचायत वार्ड संख्या 10 निवासी सुनील चौधरी की 26 वर्षीय पत्नी ज्योति देवी के रूप में हुई है। उधर, घटना की सूचना मिलते ही मायके वाले वहां पहुंचे। पुलिस को जानकारी दी। मृतक ज्योति देवी की बेटी खुशी कुमारी ने बताया कि उनके पिता सुनील चौधरी ने मां के साथ मारपीट की है। उसके बाद मम्मी कुछ बोल नहीं रही थी। खुशी और उसका भाई वहां से गायब हो गए। काफी खोजने के बाद भी ज्योति के दोनों बच्चों में से किसी बच्चों को नहीं देखा गया है। ज्योती की चचेरी भाभी ने बताया कि आरोपी पति सुनील की नजर ज्योति के मायके की प्रॉपर्टी पर थी। सुनील अपने साले की शादी नहीं होने देना चाहते थे। रिंकू देवी ने बताया कि दो-तीन महीना पहले ज्योति के भाई की शादी लगने पर सुनील चौधरी की किसी न किसी बात से लड़ाई हुआ करती थी। घटना की सूचना फुलकाहा थाना की पुलिस को दी गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल अररिया लाया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। ज्योति की मौसेरी भाभी रिंकू देवी ने बताया कि उनकी ननद ज्योति की शादी 2018 में हिंदू रीति रिवाज के अनुसार नरपतगंज प्रखंड क्षेत्र के फुलकाहा थाना क्षेत्र अंतर्गत भंगही पंचायत वार्ड संख्या 10 निवासी सुनील चौधरी से कराई गई थी। शादी के कुछ दिन के बाद ही सुनील और उसके परिजन ज्योति से बार-बार छोटी-छोटी बातों को लेकर मारपीट करते थे। इस मामले में कई दफे पंचायती भी की गई, लेकिन सुनील चौधरी अपनी आदतों से बाज नहीं आ रहे थे।

24 घंटे में आकाशीय बिजली से 15 की मौत

19 जिलों में बारिश-बिजली का अलर्ट, कई शहरों में बागमती खतरे के निशान के करीब

पटना। बिहार के सभी जिलों में बारिश का असर देखने को मिल रहा है। कई जिलों में बारिश के बाद जल जमाव की स्थिति बन गई है। इससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मौसम विभाग ने आज राज्य के 19 जिलों में बारिश और आकाशीय बिजली का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। 24 घंटे में आकाशीय बिजली से 15 लोगों की मौत हो गई है। जिन जिलों के लिए अलर्ट जारी किया गया है उनमें- सुपौल, अररिया, मधेपुरा, किशनगंज, सहरसा, पूर्णिया, कटिहार खगड़िया, भागलपुर, मुंगेर, बांका, जमुई, भोजपुर, अरवल, औरंगाबाद, बक्सर, रोहतास और कैमूर शामिल हैं। इन जिलों में भारी बारिश की संभावना है। बाकी अन्य सभी जिलों में हल्की बारिश होने के आसार हैं। गंगा नदी का जलस्तर फिलहाल सामान्य है। बागमती नदी

का जलस्तर सीतामढ़ी, शिवहर और मुजफ्फरपुर में खतरे के निशान के पास पहुंच गया है। मधुबनी में कमला बलान भी खतरे के निशान के पास पहुंच गई है। सुपौल और खगड़िया में कोसी, जबकि पूर्णिया में महानंदा खतरे के निशान के पास बह रही है। पिछले 24 घंटे में 313.6 एमएम बारिश दर्ज की गई है। बुधवार को पटना, गया, मुजफ्फरपुर और भागलपुर में मौसम साफ रहा है। मौसम वैज्ञानिक आनंद शंकर ने बताया कि बिहार में 26 जून से बारिश हो रही है और अगले 3 दिनों तक प्रदेश में बारिश की स्थिति बनी हुई है। पूरे प्रदेश में रुक-रुक कर हल्की और तेज बारिश होगी। पिछले 24 घंटे के दौरान आकाशीय बिजली से 15 लोगों की मौत हो गई है। इसमें रोहतास में 05, खगड़िया में 01, कटिहार में 02, गया में 02, जहानाबाद में 02, कैमूर में 01, बक्सर में 01, भागलपुर में 01 व्यक्ति शामिल हैं। आकाशीय बिजली से हुई मौत पर सीएम नीतीश कुमार ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। सीएम ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। सीएम ने अविलंब मृतक के परिजनों को चार-चार लाख रुपए अनुदान देने के निर्देश दिए हैं। पिछले 24 घंटे के दौरान आकाशीय बिजली से 15 लोगों की मौत हो गई है। इसमें रोहतास में 05, खगड़िया में 01, कटिहार में 02, गया में 02, जहानाबाद में 02, कैमूर में 01, बक्सर में 01, भागलपुर में 01 व्यक्ति शामिल हैं। आकाशीय बिजली से हुई मौत पर सीएम नीतीश कुमार ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। सीएम ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। सीएम ने अविलंब मृतक के परिजनों को चार-चार लाख रुपए अनुदान देने के निर्देश दिए हैं। पिछले 24 घंटे के दौरान नवादा सबसे गर्म रहा है, जहां अधिकतम तापमान 35.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पटना का 33.9 डिग्री, शेखपुरा का 32.5 डिग्री, नवादा का 34.2 डिग्री, औरंगाबाद का 34.1 डिग्री, भोजपुर का 33.5 डिग्री,

बेगूसराय का 32 डिग्री, दरभंगा का अधिकतम तापमान 29.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दरभंगा में मंगलवार की देर रात से हो रही झमाझम बारिश ने दरभंगा नगर निगम के सारे दावे की पोल खोल दी। उत्तर बिहार के सबसे बड़े अस्पताल उ्टउळ के आपातकालीन विभाग, औषधि विभाग, शिशु रोग विभाग, स्त्री रोग विभाग समेत पूरा परिसर जलमग्न हो गया है। जल जमाव की वजह से इलाज कराने पहुंचे मरीज, उनके परिजन और स्वास्थ्यकर्मियों को काफी परेशानी हो रही है। कई घरों में नाली का गंदा पानी घुस गया। इससे लोगों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बक्सर में गंगा नदी का जलस्तर लगातार बढ़ता देखकर तटवर्ती इलाके के लोग दहशत में हैं। गुरुवार की सुबह नदी का जलस्तर दो घंटे में 1 सेंटीमीटर की रफ्तार से बढ़ रहा है। 2 दिन पहले नदी की रफ्तार काफी धीमी थी। 3 घंटे में एक सेंटीमीटर की बढ़ोतरी देखी गई थी। लेकिन बुधवार से जलस्तर की रफ्तार में तेजी देखी जा रही है। गुरुवार की सुबह 10 बजे तक बक्सर में गंगा का जलस्तर 50.65 मीटर पर पहुंच गया है। बक्सर में चेतावनी बिंदु 59.32 मीटर तथा खतरे का निशान 60.32 मीटर पर बना हुआ है। हालांकि गंगा अभी खतरे के निशान से काफी नीचे है, लेकिन बढ़ने की गति से तटवर्ती लोगों की चिंता बढ़ी हुई है। केंद्रीय जल आयोग के जूनियर इंजीनियर प्रशांत चौरसिया ने बताया कि 2 दिनों से गंगा नदी का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में लगातार हो रही बारिश के कारण नदी की रफ्तार में लगातार उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है, लेकिन अभी चिंता की बात नहीं है। खतरे के निशान से जलस्तर काफी नीचे है।

ऐसी अमानवीयता!

अपने देश में कभी-कभी समानता, मानवीयता की तमाम कोशिशों को धता बताने वाली ऐसी घटनाएं सामने आ जाती हैं कि सभ्य समाज का सिर शर्म से झुक जाता है। ऐसी ही एक बहुत दुखद घटना मध्य प्रदेश के सीधी जिले में घटित हुई है। निंदा के शब्द कम पड़ जाते हैं, जब एक इंसान को दूसरे इंसान पर मूत्र त्याग करते देखा जाता है। यह तो और भी त्रासद है कि पीड़ित व्यक्ति जनजाति विशेष का है व उत्पीड़क सवर्ण जाति का। इतना ही नहीं, आरोपी एक राजनीतिक पार्टी से जुड़ा बताया जा रहा है। जाहिर है, विवाद बहुत संगीन बन गया है और आने वालो दिनों में इसकी गूंज कम से कम मध्य प्रदेश और उसके पड़ोसी राज्यों की राजनीति में बनी रह सकती है। यह अमानवीय घटना 26 जून की है और चूंकि इसका वीडियो भी मौजूद है, इसलिए समाज की इस स्याह सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। जहां तत्काल प्रभाव से पीड़ित को न्याय देना, उसकी आर्थिक-सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है, वहीं आरोपी के खिलाफ किसी भी तरह की उदारता की कोई गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए। हाल के महीनों में ऐसी गलत हरकत के और भी मामले हुए हैं, पर यह मामला विशेष रूप से जघन्य है। इसके पहले हवाई जहाज या रेल में जो अक्षम्य घटनाएं हुई थीं, उनमें पीड़ित और उत्पीड़क में एक तरह से सामाजिक बराबरी थी, पर ताजा अपराध में सामाजिक असमानता एक बड़ा पहलू है, जिसे नजरंदाज नहीं किया जा सकता। असमानता को दूर करने की तमाम कोशिशें और सद्भावनाएं ऐसी घटनाओं पर पहुंचकर नाकाफी साबित हो जाती हैं। हमारे बीच ऐसे कौन और कितने लोग हैं, जो समाज में असमानता की शैतानी प्रवृत्ति को जारी रखना चाहते हैं? इसके साथ ही एक पहलू यह भी है कि ऐसे कितने लोग समाज में बचे हैं, जो आज भी ऐसे पीड़ित होने के लिए खुद को मजबूर पा रहे हैं? उनकी आवाज कहां है, कौन है? कानून-व्यवस्था से जुडे.संस्थान, सामाजिक संगठन और दलितों-वंचितों की नई ताकत के यशगान में कभी न थकने वाले राजनीतिक दल कहां हैं? जनजातियों में जो लोग खुद को समानता के लिए प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं, उनके लिए क्या किया जा रहा है? ऐसी घटनाएं साफ इशारा हैं कि बड़े पैमाने पर देश में ऐसे लोग हैं, जिन तक संविधान की रोशनी नहीं पहुंच पाई है। इनके बारे में अलग से सोचने की जरूरत है। मध्य प्रदेश में आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और तमाम धाराओं के साथ ही एनएसए भी लगा दिया गया है। ऐसी कड़ी सजा मिलनी चाहिए कि फिर कोई ऐसा दुस्साहस न करे। वैसे भी अनुसूचित जनजाति या आदिवासी अत्याचार के मामले में मध्य प्रदेश की छवि अच्छी नहीं है, जबकि वहां इस समुदाय की बहुत मजबूत उपस्थिति है। क्या ऐसे शोषण या असमानता के लिए किसी एक पार्टी को दोषी ठहराया जा सकता है? हालांकि, अब होगा यही कि हर पार्टी अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ते हुए प्रतिद्वंद्वी पार्टी पर आरोप जड़ेगी। इसमें दोराय नहीं कि विपक्षी दलों को एक मुद्दा मिल गया है, तो सत्ता पक्ष को राजधर्म निभाते हुए जवाब देना चाहिए।

आतंकवाद पर दो टूक

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के आभासी शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद के संदर्भ में जो कुछ कहा है, उसके गहरे निहितार्थ हैं। प्रधानमंत्री ने साफ-साफ कहा कि आतंकवाद क्षेत्रीय व वैश्विक शांति के लिए बड़ा खतरा है, और एससीओ को उन देशों की आलोचना करने से हिचकना नहीं चाहिए, जो सीमा पार दहशतगर्दी फैलाने के कृत्य को अपने नीतिगत औजार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। बताने की जरूरत नहीं होनी चाहिए कि प्रधानमंत्री के निशाने पर कौन सा मुल्क था, जो इस संगठन का भी सदस्य देश है, बल्कि उन्होंने प्रकारांतर से चीन को भी यह जता दिया है कि कूटनीति की आड़ में आतंकियों की हिमायत और आतंकवाद के शरणार्थी मुल्कों के बचाव की उसकी नीति आलोचना से परे नहीं है और वैश्विक मंचों पर इस मामले में वह कोई नैतिक मुद्रा नहीं ले सकेगा। गौरतलब है, एससीओ के अब तक आठ सदस्य देश थे, मगर इस वर्ष से ईरान को भी पूर्णकालिक सदस्य की मान्यता मिल गई है और इस तरह इस संगठन का लगातार विस्तार हो रहा है। शंघाई सहयोग संगठन की महत्ता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इससे जुड़ने की आकांक्षा रखने वाले देशों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इस संगठन के देशों में दुनिया की लगभग 42 फीसदी आबादी बसती है और विश्व अर्थव्यवस्था में महज इन आठ-नौ देशों की भागीदारी करीब एक चौथाई है, ऐसे में स्वाभाविक ही पश्चिम को इसका मजबूत होना नहीं सुहाएगा और इसलिए अक्सर वह इसकी आलोचना के लिए लोकतंत्र की आड़ लेते हैं। पश्चिम का आरोप है कि ज्यादातर अधिनायकवादी नेतृत्व वाले देशों के कारण इसकी लोकतांत्रिक विश्वसनीयता संदिग्ध है। निस्संदेह, इस संगठन में शामिल चीन, रूस और पाकिस्तान जैसे देशों में लोकतंत्र पर सवाल उठाए जा सकते हैं, मगर वास्तव में पश्चिम की चिंता इस संगठन की आर्थिक क्षमताओं को लेकर है और संगठन के देश यदि इन क्षमताओं की साझेदारी में ईमानदारी दिखाएं, तो उनकी उन्नति के कई दरवाजे एक साथ खुल सकते हैं। मगर इसके लिए इन देशों के बीच असंदिग्ध भरोसा होना चाहिए। यदि यह संगठन अपनी सार्थकता साबित कर पाया, तो यकीनन भारत को भी इसका लाभ होगा।

चतुर्मास : व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण की अवधि

ANALYSIS

रमेश शर्मा

भारतीय वाड्मय में कोई उत्सव, कोई त्योहार अथवा कोई परंपरा यूं ही नहीं होती। उसके पीछे गहरा अनुसंधान होता है, व्यक्ति, समाज प्रकृति और सृष्टि का अध्ययन होता है। और निष्कर्ष से समाज को एकाकार किया जाता है। चतुर्मास के इन प्रावधानों में मानों शरीर विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञान, प्राणी विज्ञान, वनस्पति विज्ञान ही नहीं अंतरिक्ष विज्ञान के निष्कर्ष को भी समाहित किया गया है। जो बात आधुनिक विज्ञान ने आज कही है उसके निष्कर्ष का क्रियान्वयन भारतीय परंपराओं के प्रचलन अनादि काल से हो रहा है। आधुनिक विज्ञान ने उन्नीसवी और बीसवीं शताब्दी जाना कि मनुष्य सहित चींटी से लेकर हाथी तक संसार के सभी प्राणी एक-दूसरे के पूरक हैं। और सृष्टि की नियामक शक्ति प्रकृति है । प्रकृति से समन्वय और संतुलन बनाकर ही धरती पर जीवन समृद्ध और दीर्घ जीवी होगा। यदि प्रकृति का क्षय होगा तो किसी का जीवन नहीं बचेगा। यह बात भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले खोज ली थी और इसकी सावधानियां ही इस चतुर्मास के आयोजन में है।

भारतीय वाड्मय में चतुर्मास का विशेष महत्व है। यह अवधि आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी से आरंभ होकर कार्तिक माह शुक्ल पक्ष की एकादशी तक पूरे चार माह रहती है। मान्यता है कि इस अवधि में भगवान नारायण पाताल लोक में विश्राम करते हैं इसलिये कोई शुभ काम नहीं होते। लेकिन आश्चर्यजनक पक्ष यह है कि यदि चतुर्मास में देव शयन होता है और कोई पवित्र कार्य नहीं हो सकते तब सनातन परंपरा के सभी बड़े और महत्व पूर्ण त्योहार जैसे गुरु पूर्णिमा, रक्षाबंधन, नागपंचमी, ऋषि पंचमी, गणेशोत्सव, जन्माष्टमी, संतान सप्तमी, करवा चौथ, हरियाली अमावस, पितृपक्ष, नवरात्र, दशहरा, दीवाली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज आदि सभी बड़े त्योहार इसी चार माह की अवधि में ही आते हैं। बड़े त्योहारों में केवल होली है जो इस चतुर्मास की अवधि से बाहर है । यदि कोई शुभ कार्य नहीं हो सकते तो बड़े-बड़े त्योहारों की श्रृंखला का प्रावधान इसी अवधि में क्यों किया गया है? इस प्रश्न का उत्तर हमें इन आयोजनों के विश्लेषण में मिल जाता है । चतुर्मास में जो त्योहार होते हैं, और जिन आयोजन को या कार्यों को निषेध बताया गया है, इन दोनों का विश्लेषण करें तो हम पायेंगे कि वर्जित किये गये सभी आयोजन भले दिखने में सामूहिक लगते हों, उनका आयोजन समूह में होता हो पर वे सभी व्यक्तिगत उत्सव हैं, व्यक्तिगत प्रभाव की स्थापना या प्रदर्शन के आयोजन हैं। इन आयोजनों में समाज या राष्ट्र हित निहित नहीं है। व्यक्ति का हित या व्यक्तित्व के प्रभाव का प्रदर्शन एक बात है और व्यक्ति या व्यक्तित्व का निर्माण बिल्कुल दूसरी बात है। जैसे विवाह, नामकरण, यज्ञोपवीत, नये घर का निर्माण आदि कार्यों में व्यक्ति या परिवार का हित तो होता है संतोष मिलता है, सुख भी मिलता है, व्यक्ति या परिवार का आंतरिक उत्थान नहीं होता। जबकि दूसरी ओर त्योहारों के रूप में जिन आयोजनों का प्रावधान किया गया है वे सब किसी निजीत्व के प्रदर्शन या प्रसन्नता के लिये नहीं अपितु व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के सशक्तिकरण और समृद्धिकरण के निमित्त हैं। उनका उद्देश्य व्यक्ति को तन से, मन से, बुद्धि से और विवेक बल से समृद्ध बनाना है, परिवार को सशक्त बनाना है, समाज को संगठित और उन्नत बनाना है और संपूर्ण राष्ट्र एकता के सूत्र में आबद्ध करना है। त्योहारों के माध्यम से चतुर्मास की इस अवधि में व्यष्टि से समष्टि तक के एकाकार होने की यात्रा होती है। भारतीय वाड्मय में कोई उत्सव, कोई त्योहार अथवा कोई परंपरा यूं ही नहीं होती। उसके पीछे गहरा अनुसंधान होता है, व्यक्ति, समाज प्रकृति और सृष्टि का अध्ययन होता है। और निष्कर्ष से समाज को एकाकार किया जाता है। चतुर्मास के इन प्रावधानों में मानों शरीर विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञान, प्राणी विज्ञान, वनस्पति विज्ञान ही नहीं अंतरिक्ष विज्ञान के निष्कर्ष को भी समाहित किया गया है। जो बात आधुनिक विज्ञान ने आज कही है उसके निष्कर्ष का क्रियान्वयन भारतीय परंपराओं के प्रचलन अनादि काल से हो रहा है। आधुनिक विज्ञान ने उन्नीसवी और बीसवीं शताब्दी जाना कि मनुष्य सहित चींटी से लेकर हाथी तक संसार के सभी प्राणी एक-दूसरे के पूरक हैं। और सृष्टि की नियामक शक्ति प्रकृति है । प्रकृति से समन्वय और संतुलन बनाकर ही धरती पर जीवन समृद्ध और दीर्घ जीवी होगा। यदि प्रकृति का क्षय होगा तो किसी का जीवन नहीं बचेगा। यह बात भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले खोज ली थी और इसकी सावधानियां ही इस चतुर्मास के आयोजन में हैं। इसे अनदेखा करके दुनिया ने विकास के नाम विनाश का मार्ग पकड़ लिया है। विज्ञान का दंभ भरने वाली दुनिया के सामने अब सत्य सामने आया है तो अब मार्ग बदलने की छटपटाहट है। लेकिन भारत ने यह सावधानी और प्रकृति से समन्वय के साथ जीवन के संचालन का प्रावधान सैकड़ों हजारों साल से कर रखा है। चतुर्मास में होने वाली उत्सव परंपरा में वे सभी सावधानियां हैं जिनमें व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र अपना विकास तो करे पर प्रकृति का संरक्षण भी साथ साथ चले। हम जानते हैं कि प्राणी को भोजन, पानी श्वांस और आरोग्य सब प्रकृति से मिलता है। प्रकृति में जितने पदार्थ जिस अनुपात में हैं वे सब उसी अनुपात में मनुष्य देह के भीतर हैं। और यह सभी पदार्थ पांच तत्वों से बने हैं। ये तत्व धरती, आकाश अग्नि जल और पवन हैं। यदि प्रकृति में इनके अनुपात में परिवर्तन होगा तो इसका प्रभाव प्राणी देह पर भी पड़ता है। इन चार महीने में इन पांच तत्व के अनुपात में परिवर्तन आता है। यदि सावधानी से इस परिवर्तन के अनुरूप स्वयं को सक्षम न किया तो यह अवधि मनुष्य को रोग ग्रस्त बना देगी। चतुर्मास में भारतीय उत्सवों में न केवल इस अवधि के परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को सक्षम बनाना है अपितु इतना समृद्ध बनाना है कि फिर वर्ष भर तक कोई परिवर्तन व्यथित न कर सकेगा। इन चार माहों की त्योहार परंपरा का नियमन करने पर मनुष्य में शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सक्षमता तो आती ही है इसके अतिरिक्त उसका दृष्टिकोण सकारात्मक और सद्भाव से भरा होगा। चतुर्मास की अवधि में उत्सव परंपरा को समझने के लिये तीन विषयों पर ध्यान देना होगा। एक मनुष्य की संरचना का रहस्य, दूसरा प्राणियों एवं वनस्पति का जीवन में उपयोगिता और तीसरा पुराणों में वर्णित कथाओं का संदेश। यदि कथाओं के रहस्य को समझेंगे तो पायेंगे कि उनमें प्रथम दोनों बिंदुओं के निष्कर्ष का समाधान है। इसके लिये हम मनुष्य को समझें। मनुष्य का व्यक्तित्व दो प्रकार का होता है। एक जो दिखाई देता है और दूसरा जो दिखाई नहीं देता। जैसे चेहरा हाथ पैर त्वचा, मांस, हड्डियां, हृदय, लीवर किडनी आदि सब देख सकते हैं पर मन, भाव विचार वृत्ति, विवेक, ज्ञान, मेधा, प्राण शक्ति आदि दिखाई नहीं देते। जैसे शरीर के रोग होते हैं वैसे ही मन, प्राण चित्त वृत्ति भाव आदि भी रोग ग्रस्त होते हैं। जिस प्रकार शरीर की व्याधियां और रोग मनुष्य के मन, वचन विवेक विचार वृत्ति सबको प्रभावित करतीं हैं उसी प्रकार मन, भाव विचारों की व्याधियां भी शरीर को प्रभावित करते हैं और इन सबका प्रभाव मनुष्य के जीवन ही नहीं वरन पूरे वातावरण पर प्रभाव डालता है परिवार पर पड़ता है समाज पर पड़ता है और देश भर भी पड़ता है। व्यक्ति के स्वास्थ्य का प्रभाव उसकी प्रगति, उसके कार्य और कार्य की गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है। इसलिये भारतीय वाड्मय में शरीर के साथ मन बुद्धि ज्ञान विवेक के स्वास्थ्य और आत्म शुद्धि पर भी ध्यान दिया गया है। मनुष्य देह में मुख्यतया पांच आयाम होते हैं। एक शरीर जो भोजन अर्थात अन्न से आकार पाता है इसे अन्नमय कोष जिसे शरीर कहते हैं। दूसरी चेतना जिससे शरीर सक्रिय रहता है इसे ₹प्राण मय कोष₹ कहते हैं। तीसरा मन जिसके संकेत पर प्राण शक्ति सक्रिय होकर शरीर को संचालित करती है इसे ₹मनोमय कोष₹ कहते हैं। चौथा ज्ञान जिससे उत्पन्न विवेक मन की इच्छाओं को संतुलित करता है इसे ₹ज्ञानमय कोष₹ कहते हैं। और अंत में आत्मा आत्मा जिसका संबंध परमात्मा (यूनिवर्स की एनर्जी) से होता है, इसे आत्ममय कोष कहते हैं। चतुर्मास के इन चार माहीनों में मनुष्य को चींटी से हाथी तक सभी प्राणियों, वनस्पति में नन्हीं दूब से लेकर विशाल वट और पीपल वृक्ष तक और अंतरिक्ष के सभी गृहों के साथ समन्वय करके जीवन को समृद्ध बनाने का रहस्य छुपा हुआ है। ये चतुर्मास प्राणी के प्रकृति से एकाकार होने की महत्वपूर्ण अवधि है। यदि मनुष्य इस महत्वपूर्ण कालखंड में व्यक्तिगत उत्सव और कार्यों तक सीमित रहेगा तो कैसे स्वयं समुन्नत करेगा, इसलिए देव शयन की अवधारणा स्थापित कर मनुष्य को व्यक्तिगत प्रसन्नता के आयोजन से ऊपर उठकर, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान और साधना से जोड़ा गया है। आधुनिक विज्ञान भी अनुसंधान के बाद भारत की इस परंपरा के प्रावधान से आश्चर्यचकित है कि यदि इन चार माह में निर्देशित चर्या के अनुकूल जीवन जिया जाय तो प्राणी पूरे वर्ष भर निरोग रहेगा, सशक्त रहेगा और आत्म विश्वास से भरा रहेगा। उसमें अद्भुत रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी, परिवार, समाज और राष्ट्र एक सूत्र में बंधा रहेगा। दूसरा विषय पुराण कथाओं का आता है। पुराणों के अनुसार चतुर्मास में देवशयन परंपरा का आरंभ सतयुग में राजा बलि के समय हुआ था।

लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

युवा सपनों की उड़ान 'ग्राम ज्ञानालय'

कल्पनाएं जब सजती और संवरती हैं तो उम्मीदों को पंख लग जाते हैं। इरादे और हौसले मजबूत हो जाते हैं। मंजिल खुद-ब-खुद तय हो जाती है। पूर्वांचल के भदोही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ग्रामीण विकास की सोच जमीन पर उतरती दिखती है। भदोही कालीन का हब है। यहां कालीन तैयार होते हैं। देश के नए संसद भवन में भदोही की कालीन बिछाई गई हैं। पूर्वांचल में वैसे अच्छे खासे शैक्षिक संस्थान हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय यहां की शैक्षणिक और सांस्कृतिक धरोहर हैं। लेकिन पूर्वांचल की 70 फीसदी आबादी कृषि अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। यहां पलायन अधिक है। आर्थिक विपन्नता की वजह से युवाओं के प्रतियोगी स्पर्धा के सपने अधूरे रह जाते हैं। लेकिन उन सपनों को पूरा करने के लिए भदोही जनपद से शुरू हुई एक नवाचार की पहल उत्तर प्रदेश और देश के लिए एक मिसाल बनती दिखती है। भदोही के युवा जिला कलेक्टर गौरांग राठी की एक अनूठी पहल पूरे उत्तर प्रदेश और देश की सोच बदल सकती है। भदोही को शहर-ए-कालीन भी कहा जाता है। दुनिया भर से यहां कालीन निर्यात होता है। हालांकि शैक्षिक विकास को लेकर यहां बहुत कुछ नहीं हुआ है। लेकिन गांवों में नवाचार के तहत 'ग्राम ज्ञानालय' की स्थापना कर युवाओं को नई दिशा देने की पहल शुरू की गई है। इस तरह ग्रामीण अंचलों में स्थापित किए जा रहे ग्राम ज्ञानालय में युवाओं के लिए अकादमिक स्तर की सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। जनपद के 546 ग्राम पंचायतों में आधुनिक 'ग्राम ज्ञानालय' की स्थापना की तरफ बड़ी तेजी से कदम बढ़ रहे हैं। भदोही जनपद में तकरीबन 150 गांवों में इसकी शुरूआत हो चुकी है। शुरू में ही जॉब की तैयारी करने और पढ़ने वाले करीबन 4000 युवा और छात्र-छात्राएं इससे जुड़कर उच्च गुणवत्ता परक शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं। इसकी वजह से उनके शैक्षिक विकास का आधार बेहद मजबूत हो रहा है। पूरे देश में अपनी तरह का आधुनिक सोच को प्रदर्शित करने वाला यह 'ग्राम ज्ञानालय' युवाओं को तेजी से आकर्षित कर रहा है। योगी सरकार के जनप्रतिनिधि इसमें बढ़-चढ़ कर सहभागिता करते दिखते हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव की अध्यक्षता में विकास प्राथमिकता के कार्यक्रमों में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में जिलाधिकारी गौरांग राठी ने पीपीटी के माध्यम से 'ग्राम ज्ञानालय' के विजन से शासन को अवगत कराया है। मुख्य सचिव नवाचार की इस अनूठी पहल से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि इस रिपोर्ट को केंद्र सरकार को भेजा जाएगा। इस तरह की सुविधा पूरे उत्तर प्रदेश और देश में उपलब्ध कराई जानी चाहिए। युवाओं में शैक्षणिक विकास और प्रतियोगी स्पर्धा पैदा करने के लिए यह नवाचार अपने तरह का अकल्पनीय है। युवाओं के सपनों को आयाम देने के लिए ग्राम पंचायतों में इस तरह के ज्ञानालय यानी वाचनालय की स्थापना की जा रही है। वाचनालय में भरपूर पुस्तक, फर्नीचर, सीसीटीवी, स्मार्ट टीवी और ऑनलाइन कक्षाओं की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा अभ्युदय योजना के तहत रिटायर्ड शिक्षक, प्रवक्ता और दूसरे विषय के विशेषज्ञ इन छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। संबंधित पंचायत या ग्राम सचिवालय भवन में ही एक खास कमरा बनाकर वहां संचालित किया जा रहा है। गांव के पंचायत प्रतिनिधि इसमें खासी भूमिका निभा रहे हैं। ग्रामीण अंचलों में युवाओं में शिक्षा को लेकर अच्छी खासी ललक है। लेकिन अधिकांश परिवारों की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है। वैसे भी उत्तर प्रदेश सरकार दलित और पिछड़े छात्रों को लखनऊ में इस तरह की सुविधा उपलब्ध कराती है, लेकिन वहां सभी नहीं पहुंच पाते हैं। सामान्य और गरीब परिवारों से होने के नाते सुख सुविधाओं के अभाव में नई दिल्ली, प्रयागराज, वाराणसी, जयपुर जैसे शहरों में जाकर कोचिंग कक्षाएं नहीं ले सकते हैं। क्योंकि उनके घर की माली हालत उस तरीके की नहीं है। लेकिन ऐसे बच्चे जो कड़ी स्पर्धा में अपने को खुद साबित करना चाहते हैं उनके लिए ग्राम ज्ञानालय अनूठे हैं। देश की चर्चित ऑनलाइन कोचिंग संस्थान खान सर और दूसरी अकेडमिक कोचिंग सेवाओं की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रतियोगिता दर्पण, क्रॉनिकल और अन्य स्तरीय मासिक पत्रिकाएं और अच्छे प्रकाशन की महंगी किताबें उपलब्ध हैं। जिलाधिकारी गौरांग राठी बताते हैं कि पूर्वांचल के युवाओं में पढ़ने की एक अजीब लगन हमने देखी है। वे पढ़ना चाहते हैं लेकिन यहां सामान्य कमजोर वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिए सुविधाएं बेहतर उपलब्ध नहीं हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है कि वह दिल्ली प्रयागराज, वाराणसी, जयपुर या दूसरे शहरों में जाकर प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग ले सकें। हालांकि राज्य और केंद्र सरकार कमजोर वर्ग के ऐसे युवाओं को राजधानी में कोचिंग की सुविधा उपलब्ध कराती हैं। उत्तर प्रदेश की योगी और केंद्र की मोदी सरकार ग्रामीण विकास को लेकर बेहद संजीदा है। अब गांव को सीधे आर्थिक सुविधाएं मिल रहीं हैं। उन्हें अच्छी खासी स्कॉलरशिप भी दी जाती है। लेकिन हर परिवार के युवा शहर तक नहीं पहुंच पाते हैं। ऐसे हालात में ग्राम ज्ञानालय बेहतर विकल्प हैं। यहां अध्ययन की आधुनिक सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। जॉब की तैयारी करने वाले युवा और युवतियां अपनी मंजिल को आयाम दे सकते हैं। देश के सुदूर ग्रामीण अंचलों में ऐसी शैक्षणिक सुविधा आधुनिक समय की मांग है। लोगों को इसके लिए आगे आना चाहिए।

मातृभाषा में निहित समृद्धि का सूत्र

के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली एनसीईआरटी (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद) की नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क कमेटी ने 11वीं एवं 12वीं कक्षाओं में दो भारतीय भाषाओं को अनिवार्य रूप से पढ़ाने की सिफारिश की है। कोठारी आयोग से लेकर प्रो. यशपाल कमेटी या दूसरे विद्वानों ने भी अपनी भाषाओं में शिक्षा की बात कही, मगर सत्ता पर एक ऐसा वर्ग हावी रहा, जो अंग्रेजी के बूते ही अपनी धौंस जमा सकता था। लिहाजा बार-बार की सिफारिशों के बावजूद और शिक्षा की लगातार गिरती स्थितियों में भी भारतीय भाषाएं आगे नहीं बढ़ पाईं। अब वर्तमान केंद्र सरकार ने इस रोग को पहचाना है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बार-बार इस बात को दोहराया गया है कि यथासंभव अपनी भाषा में शिक्षा दी जाए। प्राथमिक स्तर पर तो प्रादेशिक भाषा-बोली को ही प्राथमिकता दी गई है। उसके आगे स्कूली शिक्षा में भी इसे जरूरी माना गया है। पिछले दिनों विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालयों को आदेश दिया कि जहां अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाई होती है, लेकिन उसमें पढ़ने वाले यदि अपनी प्रादेशिक भाषा में उत्तर देना चाहें तो उन्हें उसकी छूट दी जाए। मेडिकल और इंजीनियरिंग की शिक्षा भी भारतीय भाषा में शुरू हो गई है और इसके लिए पुस्तकें भी तैयार की जा रही हैं। इसी के समानांतर नौकरियों में भी अपनी भाषा धीरे-धीरे प्रवेश कर रही है। हालांकि गुलामी में पले और सामंती संस्कारों के अधिकारी अपनी विशिष्टता के लिए अभी भी अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ पा रहे। नतीजतन आज भारतीय भाषाएं कम से कम उत्तर भारत के स्कूलों से गायब हो गई हैं। निजी स्कूलों में तो उनकी कोई जगह ही नहीं है। वहां नौवीं कक्षा से ही हिंदी या कोई भी भारतीय भाषाएं मुश्किल से ही पढ़ाई जाती हैं। अंग्रेजी के साथ जापानी, फ्रेंच आदि दुनिया भर की विदेशी भाषाएं उपलब्ध हैं, लेकिन भारत की भाषाएं नहीं। थोड़ी-बहुत भारतीय भाषाएं सरकारी स्कूलों में ही बची हैं। वहीं दक्षिण भारत में कम से कम दसवीं तक भारत की भाषाएं पढ़नी होती हैं। महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल में तो दो से ज्यादा भारतीय भाषाएं विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध रहती हैं। इसीलिए विज्ञान, गणित, रसायनशास्त्र जैसे विषय पढ़ने वाले विद्यार्थी 11वीं एवं 12वीं में भी अपनी भाषा के साथ-साथ शिक्षा का माध्यम भी भारतीय भाषाओं का चुनते हैं। भारतीय भाषाओं को पढ़ने से दक्षिण भारत कहां पीछे रह गया है? क्या विकास के सभी पैमानों पर वहां बेहतर स्थिति नहीं है? उत्तर भारत में लोग अंग्रेजी को विकास का पर्याय मानते हैं, जबकि हकीकत इससे विपरीत है। उत्तर भारत में अंग्रेजी इतनी हावी होती जा रही है कि उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा में लाखों बच्चे हिंदी में फेल हो रहे हैं। इसी अनुपात में उनकी शिक्षा की समझ में भी गिरावट आई है। याद रखें कि विषय की समझ अपनी भाषा में ही बनती है। यदि एक बार समझ पैदा हो गई तो उसके बाद कोई भी विदेशी भाषा सीखना आसान हो जाता है। इसीलिए पूरे यूरोप, चीन, जापान से लेकर दुनिया के सभी देश अपनी भाषा में ही शिक्षा देते हैं। कोई भी विकसित देश ऐसा नहीं है, जिसकी शिक्षा अपनी भाषा में न होती हो। यही कारण है कि वे वैज्ञानिक उपलब्धियों, नई खोजों, रचनात्मकता के विकास और समाज की बेहतरी में सबसे आगे हैं। कुछ लोग विज्ञान, गणित आदि की शिक्षा अपनी भाषा में देने का विरोध करते हैं। यह भ्रामक अवधारणा है। गणित का उदाहरण लीजिए। यदि व्यवहार में गुणा-भाग करने की जरूरत पड़े तो सभी उसे अपनी भाषा में दोहराते हैं। यानी कि मस्तिष्क का तंत्रिका तंत्र मातृभाषा के अनुरूप विकसित होता है। इसीलिए दुनिया को समझने की उसकी शक्ति भी उसी अनुपात में बढ़ती है। वही रचनात्मकता नवोन्मेष को आगे बढ़ाती है। फिर शिक्षा वैसा बोझ नहीं बनती जैसा कि अपने देश में हो रहा है।

Social Media Corner

सच के हक में...

महान राष्ट्रवादी चिंतक, शिक्षाविद् और भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को उनकी जन्म-जयंती पर शत-शत नमन। एक सशक्त भारतवर्ष के निर्माण के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके आदर्श और सिद्धांत देश की हर पीढ़ी को प्रेरित करते रहेंगे।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के के ट्विटर अकाउंट से)

भाजपा सरकार में आदिवासियों के साथ किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार या अपराध बर्दाश्त नहीं किया जाता। मध्यप्रदेश में आरोपी के घर बुलडोजर चला, रासुका लगाई गई, उसे जेल भेजा गया। उसके विरुद्ध आगे भी कठोर कार्रवाई होती रहेगी ताकि समाज में एक नजीर बन सके। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने आज अपने आवास पर हमारे आदिवासी भाई के पाव पखारे। उनका सम्मान किया। संदेश बहुत स्पष्ट है कि कोई भी अतिवादी शक्ति आदिवासियों पर अत्याचार करेगी तो उसका परिणाम बहुत घातक होगा।

प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा॥ सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे॥

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)

I WANT TO SAY...

THE PHOTON NEWS

सावन का महीना शुरू हो चुका है। यह शिव की आराधना के अलावा कई अन्य तरह की गतिविधियों के लिए जाना जाता है। आर्थिक व कारोबारी महत्व भी है। इस दौरान महिलाओं के सजने-संवरने में हरे रंग की अलग महत्ता होती है। खासतौर पर हरे रंग की चूड़ियों का कारोबार तो काफी बढ़ जाता है। वहीं अब एक नई परंपरा चल पड़ी है। इसमें महिलाएं हरे रंग की चूड़ियां, हरे रंग की साड़ी या अन्य परिधान पहनकर शामिल होती हैं। सावन क्वीन प्रतियोगिताएं होती हैं जिसमें किसी एक को सावन क्वीन की उपाधि दी जाती है। राजधानी सहित विभिन्न शहरों में सावन में मेलों का आयोजन किया जाता है। मेलों की बहार शुरू हो चुकी है। इस तरह के मेले से ग्रामीण कलाकृतियों को मंच मिलता है। हमारे जो क्षेत्रीय उत्पाद हैं, कलाकार है, जूट से लेकर खादी और बांस के कारीगर हैं, उन्हें मेले से पहचान मिलती है। लोग भी इस तरह के उत्पाद से परिचित होते हैं और सीधे कलाकारों से जुड़ते भी हैं। सामाजिक बदलाव के मामले में तुलना करें तो कहा जा सकता है कि हमारा समाज रूढ़िवादिता से निकलकर आगे बढ़ रहा है। घूंघट में रहने और देहरी से बाहर कदम न निकालने की बातें पुरानी लगने लगी हैं। इसे महिलाओं की प्रगतिशीलता से जोड़ा जा सकता है। दरअसल, सावन ही क्यों, अन्य पर्व-त्योहारों में भी कुछ ऐसा किया जाना चाहिए कि परंपरा जारी रहे और उसमें कुछ अलग, कुछ नया भी होता रहे। इसके लिए संगठन और संस्थाओं को तो काम करना ही चाहिए। सरकार के स्तर से भी गतिविधियों को बढ़ावा दिए जाने की पहल की जानी चाहिए।

मो शरमद, रांची।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

क्या खत्म हो गया विराट-रोहित का टी20 करियर ! नए चीफ सिलेक्टर के फैसले से मिले कई बड़े संकेत

बेंगलुरू (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 मैचों के लिए टीम इंडिया का ऐलान कर दिया गया है। इसमें हार्दिक पांड्या को कप्तानी सौंपी गई है। वहीं, सूर्यकुमार यादव को उपकप्तान बनाया गया है। हालांकि, भारत के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली और नियमित वनडे और टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा को टी20 से बाहर कर दिया है। इसके बाद से इस बात की चर्चा जबरदस्त तरीके से हो रही है कि क्या टी20 में विराट कोहली और रोहित शर्मा का करियर खत्म हो गया है? वेस्टइंडीज के लिए चुनी गई टीम में कई नए खिलाड़ियों को मौका दिया गया है जिन्होंने इस साल के आईपीएल में जबरदस्त फॉर्म दिखाया था। टीम में कई नए चेहरे भी शामिल हुए हैं।

2024 की हो रही तैयारी

अगला टी20 विश्व कप 2024 में होना है। बीसीसीआई 2024 के हिसाब से अपनी तैयारियों पर फोकस कर रहा है। यही कारण है कि कप्तानी की जिम्मेदारी हार्दिक पांड्या को सौंप दी गई है। वहीं, टीम में यशस्वी जायसवाल, तिलक वर्मा और मुकेश कुमार जैसे नए चेहरों को शामिल किया गया है। खास बात यह भी है कि टीम में संजू सैमसन की वापसी हुई है। हालांकि, टीम से राहुल त्रिपाठी, दीपक हुडा, पृथ्वी शॉ, जितेश शर्मा, वाशिंगटन सुंदर, शिवम मावी जैसे खिलाड़ियों को बाहर किया गया है। इन्हें जनवरी-फरवरी में न्यूजीलैंड के खिलाफ श्रृंखला के लिए चुना गया था। वहीं, वेस्टइंडीज के खिलाफ रिंकू सिंह का मौका नहीं दिया गया है जिसको लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। अजित अगरकर ने हाल में ही चयन समिती की जिम्मेदारी संभाली है।

रोहित-कोहली का टी20 करियर खत्म

रोहित शर्मा और विराट कोहली पिछले साल ऑस्ट्रेलिया में हुए टी-20 विश्वकप में खेलते हुए नजर आए थे। हालांकि, उसके बाद उन्हें किसी भी इंटरनेशनल टी20 सीरीज में मौका नहीं दिया गया है। ऐसे में सवाल साफ तौर पर उठ रहे हैं कि क्या रोहित और कोहली को टी-20 से बाहर रखने का फैसला कर लिया गया है। बीसीसीआई उन्हें बाहर रखने को लेकर कोई साफ जानकारी नहीं दे रहा है। इतना ही नहीं, भुवनेश्वर कुमार और मोहम्मद शमी को भी टीम में सेलेक्ट नहीं किया जा रहा है। इसकी वजह से सवाल उठ रहे हैं। रिंकू सिंह और ऋतुराज गायकवाड को क्यों नहीं सेलेक्ट किया गया, यह भी बड़े सवाल है जिसका जवाब अजित अगरकर को देना पड़ा सकता है।

सिंधू, सेन कनाडा ओपन के दूसरे दौर में

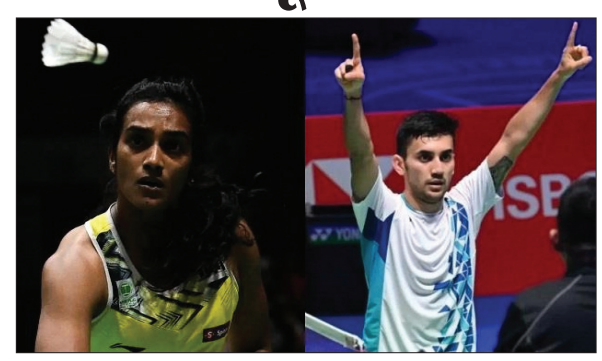

कैलगरी (एजेंसी)। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पी वी सिंधू और लक्ष्य सेन कनाडा ओपन के प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए जिन्होंने बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर के इस सुपर 500 टूर्नामेंट में सीधे गेम में जीत दर्ज की। चौथी वरीयता प्राप्त सिंधू ने कनाडा की टालिया एनजी को 21 . 16, 21 . 9 से हराया वहीं सेन ने दूसरी वरीयता प्राप्त थाईलैंड के कुंलावुत विदितसर्न को 21 . 18, 21 . 15 से मात दी।

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधू का सामना अब जापान की नतसुकी निदाइरा से होगा जबकि सेन ब्राजील के वायगोर कोल्हो से खेलेंगे । बी साई प्रणीत को कोल्हो ने 21 . 12, 21. 17 से हराया। रूत्विका शिवाना गाड्डु भी पहले दौर में थाईलैंड की सुपनिदा के से 21 . 12, 21 . 3 से हारकर बाहर हो गई।

रोहित ही रहें एकदिवसीय विश्वकप में कप्तान : सहवाग

-जीत के लिए पूरी टीम को बेहतर प्रदर्शन करना होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा की प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह अच्छा काम कर रहे हैं और उन्हें ही एकदिवसीय विश्व कप में कप्तान बनाये रखना चाहिये। सहवाग ने रोहित की कप्तानी क्षमताओं पर भरोसा जताते हुए कहा, रोहित कप्तान के रूप में अच्छा काम कर रहे हैं और उन्हें विश्व कप 2023 में भी टीम की कमान संभाले रखनी चाहिये। सहवाग ने साथ ही कहा कि केवल कप्तान ही अपने बल पर टीम को जीत नहीं दिला सकता और इसके लिए सभी को प्रयास करना होगा। टीम को एकजुट होकर प्रयास करने से ही सफलता मिलती है। सहवाग के मुताबिक, जीत के लिए खिलाड़ियों का सही संयोजन और सकारात्मक मानसिकता जरुरी है। सहवाग का मानना है कि कप्तान की भूमिका अहम है पर विश्व कप जीतने के लिए वह पूरी तरह जिम्मेदार नहीं है। उन्होंने कहा, विश्व कप कप्तान नहीं, टीम जीतती है। ग्यारह खिलाड़ियों का सही संयोजन और सकारात्मक मानसिकता विजेता टीम को तय करती है। उन्होंने कहा कि कप्तान की सफलता टीम के प्रदर्शन और किसी दिन उनके द्वारा किए गए सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करती है।

पिछले अनुभवों का हवाला देते हुए सहवाग ने कहा कि कई बार अच्छे कप्तानों के होने के बाद भी भारतीय टीम सेमीफाइनल से आगे नहीं बढ़ पायी। विराट कोहली के नेतृत्व में टीम ने कई द्विपक्षीय सीरीज जीतीं पर अहम सेमीफाइनल मुकाबलों में टीम जीतने में अफसल रही। इसी प्रकार जब रोहित शर्मा ने टीम की कप्तानी की, तो उन्हें टी20 विश्व कप सेमीफाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। इससे साबित होता है कि जीत केवल कप्तान नहीं दिला सकता।

विश्व कप 2023 से पहले बांग्लादेश क्रिकेट में बड़ा भूचाल,

कप्तान ने अचानक लिया संन्यास, प्रेस कॉन्फ्रेंस में फूट-फूटकर रोए

ढ़ाका (एजेंसी)। बांग्लादेश के वनडे कप्तान तमीम इकबाल ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर क्रिकेट जगत को चौंका दिया है। वह पहले ही टी20 प्रारूप से संन्यास ले चुके थे और आखिरी बार उन्होंने अप्रैल में टेस्ट खेला था। फिलहाल बांग्लादेश अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज खेल रही है। टीम शुरुआती मैच हार गई जबकि तमीम पहले वनडे में कुछ खास कमाल नहीं कर सके हैं। ऐसी खबरें भी आई थीं कि वह ओपनर के लिए फिट नहीं हैं लेकिन फिर भी उन्होंने खेलने का फैसला किया था। तमीम इकबाल ने दोपहर 12 बजे (स्थानीय समयानुसार) अचानक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई और संन्यास की घोषणा की।

हुए भावुक: दावा किया जा रहा कि वह बेहद भावुक थे और घोषणा करते समय रो भी पड़े। तमीम का फैसला बांग्लादेश क्रिकेट के लिए बड़ा झटका है, जबकि भारत में विश्व कप शुरू होने में केवल तीन महीने बचे हैं। उन्होंने कहा कि यह मेरे लिए अंत है। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ

प्रयास किया है। मैं इसी क्षण अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले रहा हूं। मैं अपनी टीम के सभी साथियों, कोचों, बीसीबी अधिकारियों, अपने परिवार के सदस्यों और उन लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं जो मेरी लंबी यात्रा में मेरे साथ रहे। उन्होंने मुझ पर विश्वास बनाए रखा। मैं प्रशंसकों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं। आपके प्यार और मुझ पर विश्वास ने मुझे बांग्लादेश के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित किया। मैं अपने जीवन के अगले अध्याय के लिए आपकी प्रार्थनाएँ माँगना चाहता हूँ। कृपया मुझे अपनी प्रार्थनाओं में रखें।

2007 विश्व कप में रही अहम भूमिका

टाइगर्स पहले ही मुख्य कार्यक्रम के लिए क्वालीफाई कर चुके हैं और अब इस प्रारूप में उनके पास कोई कप्तान नहीं बचा है। शाकिब अल हसन इस समय टी20ई कप्तान हैं जबकि लिटन दास टेस्ट में बांग्लादेश का नेतृत्व करते हैं। यह देखना होगा कि बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) इनमें से किसी को कम से कम विश्व कप तक कप्तान नियुक्त करता है या नहीं। जहां तक तमीम इकबाल की बात है, उन्होंने बांग्लादेश के लिए 70 टेस्ट मैच खेले और 38.89 की औसत से 5134 रन बनाए, जिसमें उनके नाम 10 शतक भी हैं। उन्होंने इस प्रारूप में आखिरी बार अप्रैल में आयरलैंड के खिलाफ खेला था। जहां तक वनडे का सवाल है, उन्होंने 241 मैच खेले और 36.62 की औसत से 14 शतक और 56 अर्धशतक के साथ 8313 रन बनाए। तमीम 2007 विश्व कप में भारत को हराने वाली बांग्लादेश टीम का भी हिस्सा थे। बाएं हाथ के बल्लेबाज ने लक्ष्य का पीछा करते हुए मैच विजयी अर्धशतक बनाया था।

विम्बलडन : जोकोविच और स्वियातेक जीते, प्रदर्शनकारियों और बारिश ने डाला खलल

विंबलडन । विम्बलडन में नोवाक जोकोविच 350वां ग्रैंडस्लैम मैच जीतने वाले रोजर फेडरर और सेरेना विलियम्स के बाद टेनिस के इतिहास में तीसरे खिलाड़ी बन गए जबकि दो साल पहले की उपविजेता कैरोलिना प्लिसकोवा पहले दौर में क्वालीफायर से हार गई। तीन पर्यावरण कार्यकर्ताओं को मैदान पर नारंगी रंग के कागज के टुकड़े फेंककर मैच में बाधा पहुंचाने के कारण गिरफ्तार किया गया। उन्होंने ये कागज सेंटर कोर्ट पर बिकने वाले सामान के डिब्बों में छिपा रखी थी। इसके अलावा मंगलवार के बाद बुधवार को भी बारिश हुई जिससे खेल का समय काफी बर्बाद हुआ। छठी रैंकिंग वाले होल्गर रूने ने ब्रिटेन के वाइल्ड कार्डधारी जॉर्ज लोफागेन को 7.6, 6.3, 6.2 से मात दी। पुरूष वर्ग में सबसे ज्यादा 23 ग्रैंडस्लैम जीतने वाले जोकोविच ने जोर्डन थाम्पसन को 6.3, 7.6, 7.5 से हराया। दो बार के ग्रैंडस्लैम चैम्पियन स्टेफानोस सिटसिपास ने 2020 अमरीकी ओपन चैम्पियन डोमिनिक थीम को 3.6, 7.6, 6.2, 6.7, 7.6 से मात दी। शीर्ष वरीयता प्राप्त पोलैंड की इगा स्वियातेक ने स्पेन की सारा सोरिबोस टोर्मो को 6-2, 6-0 से हराकर तीसरे दौर में प्रवेश किया। रूस के तीसरे वरीय मेदवेदेव ने ब्रिटेन के 20 साल के आर्थर फेरी को पहले दौर के मुकाबले में सीधे सेटों में 7-5, 6-4, 6-3 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। अमरीका के टेलर फिट्ज़ और फ्रांसिस टियाफो भी विपरीत अंदाज में जीत दर्ज करते हुए दूसरे दौर में जगह बनाने में सफल रहे। नौवें वरीय फिट्ज ने एक सेट से पिछड़ने के बाद जोरदार वापसी करते हुए जर्मनी के यानिक हेंफमैन को 6-4, 2-6, 4-6, 7-5, 6-3 से हराया जबकि टियाफो ने यिबिंग वू को सीधे सेटों में हराया।

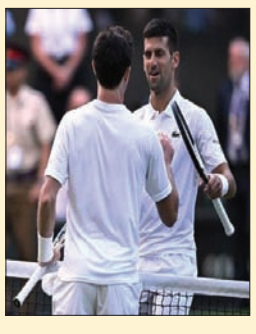

स्मिथ 100 टेस्ट खेलने वाले 16 वें ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी बने

हैडिंग्ले । ऑस्ट्रेलियाई टीम के अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले मैच में उतरते ही एक अहम उपलब्धि अपने नाम कर ली है। इसी के साथ ही स्मिथ 100 टेस्ट खेलने वाले क्लब में शामिल हो गये हैं। वह सौ टेस्ट खेलने वाले 16 वें ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज हैं। स्मिथ ने इससे पहले 99 मैचों में 59.56 की औसत से 9113 रन बनाए हैं। उन्होंने 32 शतक और 37 अर्धशतक लगाए। केवल 15 ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटरों ने अबतक 100 टेस्ट खेले हैं। ऑस्ट्रेलिया के उस्मान ख्वाजा ने स्मिथ की प्रशंसा करते हुए कहा, वह वास्तव में ज्यादा कुछ नहीं कहता है और मुझे पता है कि वह कैसा है। मैं वास्तव में उससे ज्यादा बात नहीं करता। आप कैसे चल रहे हैं? अच्छा, कुछ? यह हमारी बातचीत उतनी ही गहरी है जब तक कि वास्तव में कुछ सामने न आ जाए। स्मिथवास्तव में काम करता है, वह क्षेत्र में आता है, मुझे पता है कि वह ऐसा करता है इसलिए मैंने इसे रहने दिया। हमने एक साथ बहुत अच्छी बल्लेबाजी की है, जब से मैं ऑस्ट्रेलिया के लिए खेल रहा हूं, मैंने कई साझेदारियां की हैं। मैं समझता हूं कि जब स्मिथ बल्लेबाजी कर रहा होता है तो आप उसे वैसे ही रहने देते हैं।

बांग्लादेश दौरे के लिए आगरा की राशि को मिली भारतीय महिला क्रिकेट टीम में जगह

दुबई। (एजेंसी)। आगरा की राशि कनौजिया को बांग्लादेश दौरे के लिए भारतीय महिला क्रिकेट टीम के लिए चुना गया है। टीम की घोषणा के बाद राशी का परिवार उसे राष्ट्रीय टीम में शामिल किए जाने से अभिभूत था। महिला क्रिकेटर राशि कनौजिया वर्तमान में मुंबई में रेलवे में सहायक क्लर्क के पद पर कार्यरत हैं। उसे तीन महीने हो गए हैं।

राशि कनौजिया की मां एक आर्मी स्कूल में टीचर हैं जबकि उनके पिता सेना से रिटायर हैं। परिवार में उनके दो बड़े भाई हैं। राशि कनौजिया के माता-पिता ने बताया, 'राशि अपने बाएं हाथ से काम करती थी, हमें बचपन से ही यह विचार था कि वह भारत के लिए खेलना चाहती है। उसे टीम के लिए चुना गया है, वह बहुत खुश है। परिवार ने इसके लिए कड़ी मेहनत की है। राशि का क्रिकेट करियर और उन्हें कोचिंग दिलाना थोड़ा मुश्किल होता था, लेकिन राशि ने खेल के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी पूरे मन से की, हमें बहुत खुशी है कि वह टीम इंडिया के लिए चुनी गईं।'

इससे पहले भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने रविवार को बांग्लादेश के आगामी दौरे के लिए भारतीय महिला वनडे और टी20 टीम की घोषणा की। बीसीसीआई ने कहा, 'महिला चयन समिति ने बांग्लादेश के खिलाफ आगामी तीन मैचों की टी20आई और एकदिवसीय श्रृंखला के लिए क्रमशः भारत की टीम चुनी है। सभी छह मैच मीरपुर के शेर-ए-बांग्ला राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम (एसबीएनसीएस) में खेले जाएंगे।'

हरमनप्रीत कौर दोनों प्रारूपों में टीम का नेतृत्व करेंगी जबकि स्मृति मंधाना दोनों प्रारूपों में उनकी उप-कप्तान के रूप में कार्य करेंगी। यह दौरा तीन मैचों की टी20 सीरीज के साथ शुरू होगा और पहला मैच 9 जुलाई को खेला जाएगा। दूसरा और तीसरा मैच क्रमशः 11 जुलाई और 13 जुलाई को खेला जाएगा। दो दिन के ब्रेक के बाद तीन मैचों की वनडे सीरीज 16 जुलाई से शुरू होगी। दूसरा और तीसरा वनडे क्रमशः 19 जुलाई और 22 जुलाई को खेला जाएगा।

भारत की टी20 टीम : हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), दीप्ति शर्मा, शैफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर), हरलीन देयोल, देविका वैद्य, उमा छेत्री (विकेटकीपर), अमनजोत कौर, एस मेघना, पूजा वस्त्राकर, मेघना सिंह, अंजलि सरवानी, मोनिका पटेल, राशि कनौजिया, अनुषा बारेड्डी, मिन्नू मणि।

भारत की वनडे टीम : हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), दीप्ति शर्मा, शैफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर), हरलीन देयोल, देविका वैद्य, उमा छेत्री (विकेटकीपर), अमनजोत कौर, प्रिया पुनिया, पूजा वस्त्राकर, मेघना सिंह, अंजलि सरवानी, मोनिका पटेल, राशि कनौजिया, अनुषा बारेड्डी, स्नेह राणा।

धोनी का जन्मदिन आज, मिलने के लिए देश भर से पहुंचे प्रशंसक

रांची । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी का शुक्रवार सात जुलाई को जन्मदिन है। जिसको लेकर प्रशंसकों में जबरदस्त उत्साह है। यहां तक कि राजस्थान, यूपी महाराष्ट्र और उड़ीसा से भी प्रशंसक धोनी से मिलने पहुंचे हैं। उन्हीं में से एक राजस्थान के भीलवाड़ा से यहां पहुंचे विजेश चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) की पीली जर्सी में दिखे। विजेश धोनी से मिलने की कोशिश करते नजर आए, लेकिन जब सफल नहीं हुए तो धोनी के घर के बाहर ही रुक गये। सुबह जब धोनी अपने आवास के बाहर कार से निकल रहे थे तो विजेश ने उन्हें देखकर हाथ हिलाया और धोनी ने भी जवाब दिया। दरअसल विजेश अपने साथ धोनी के जन्मदिन का एक संदेश लिखकर लाए थे, जो उन्होंने अपने खून से लिखा था। वह धोनी से मिलकर यह संदेश देना चाहते थे, लेकिन उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। विजेश राजस्थान के भीलवाड़ा में एक क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन भी करा रहे हैं जिसका नाम उन्होंने धोनी के नाम पर रखा है। विजेश के अलावा यूपी के अयोध्या से बीएसएफ के जवान प्रमोद शर्मा, महाराष्ट्र के नागपुर से भीम सिंह और उड़ीसा के राहुल किला से सत्या भी धोनी के आवास के बाहर नजर आए। ये सभी धोनी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देना चाहते हैं।

प्रियांश -अवनीत की जोड़ी ने जूनियर मिश्रित टीम तीरंदाजी स्वर्ण पदक जीता

लिमेरिक। भारत के प्रियांश और अवनीत कौर की जोड़ी ने बुधवार को यहां विश्व तीरंदाजी युवा चैम्पियनशिप के फाइनल में इस्राइल को 146-144 से हराकर जूनियर मिश्रित टीम कम्पाउंड स्पर्धा का स्वर्ण पदक अपने नाम किया। भारत के मानव जाधव और ऐश्वर्या शर्मा ने कैडेट मिश्रित कम्पाउंड स्पर्धा में मेक्सिको को हराकर कांस्य पदक जीत लिया। यह प्रतियोगिता तीन से नौ जुलाई तक लिमेरिक विश्वविद्यायल में चल रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने शमी की पत्नी की याचिका पर एक माह में सुनवाई कर निपटारा करने का निर्देश दिया

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट ने क्रिकेटर मोहम्मद शमी की पत्नी हसीन जहां की एक याचिका पर पश्चिम बंगाल के सत्र न्यायाधीश को एक महीने के भीतर सुनवाई करने और इस मामले का निपटारा करने के निर्देश दिये। साथ ही ये भी स्पष्ट किया कि यदि यह संभव नहीं है तो सत्र न्यायाधीश इसमें संशोधन के लिए कोई भी आदेश पारित कर सकते हैं। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि शमी की पत्नी की याचिका में योग्यता मिली क्योंकि इस मामले पर पिछले 4 वर्षों से सुनवाई नहीं हुई है। अदालत ने कहा कि अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, अलीपुर द्वारा 29 अगस्त 2019 को गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया था। उक्त आदेश को शमी ने सत्र न्यायालय के समक्ष चुनौती दी थी, जिसने 9 सितंबर 2019 को गिरफ्तारी वारंट और संपूर्ण पर रोक लगा दी थी। शीर्ष अदालत ने कहा कि कार्यवाही पर सुनवाई नहीं हुई है और मुकदमे पर रोक पिछले चार वर्षों से जारी है। अदालत ने संबंधित सत्र न्यायाधीश को एक महीने की अवधि के भीतर आपराधिक पुनरीक्षण लेने और निपटाने का निर्देश दिया। शीर्ष अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि यह संभव नहीं है, तो सत्र न्यायाधीश स्थगन आदेश में संशोधन के लिए आदेश पारित कर सकते हैं। गौरतलब है कि शमी की पत्नी ने कलकत्ता हाई कोर्ट के 28 मार्च 2023 के आदेश को चुनौती दी है, जिसमें सत्र न्यायालय के आदेश को रद्द करने की उनकी प्रार्थना खारिज कर दी गई थी। पश्चिम बंगाल की एक सत्र अदालत ने शमी के खिलाफ जारी गिरफ्तारी वारंट पर रोक लगा दी थी। शमी की पत्नी ने अपने वकील दीपक प्रकाश, नचिकेता वाजपेई और दिव्यांगना मलिक के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है और आरोप लगाया है कि शमी उनसे दहेज की मांग करते थे।

मीराबाई 95 प्रतिशत फिट, पर अगले हफ्ते राष्ट्रमंडल चैम्पियनशिप में नहीं खेलेंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के अध्यक्ष सहदेव यादव ने बताया कि ओलंपिक पदक विजेता मीराबाई चानू डेढ़ महीने पहले लगी जांघ की चोट से 95 प्रतिशत उबर चुकी हैं लेकिन अगले हफ्ते भारतीय सरजमीं पर होने वाली राष्ट्रमंडल चैम्पियनशिप में हिस्सा नहीं ले पाएंगी।

तोक्यो ओलंपिक की रजत पदक विजेता मीराबाई अभी अमरीका के सेंट लुईस में डॉक्टर होर्शिंग के मार्गदर्शन में 65 दिन के रिहैबिलिटेशन में हिस्सा ले रही हैं लेकिन वह विश्व चैम्पियनशिप और एशियाई खेलों में शिरकत करेंगी। यादव ने गुरुवार को पत्रकारों को बताया, 'मीराबाई को मामूली चोट लगी थी, वह इसके लिए सेंट लुईस में रिहैब में है। वह अभी 95 प्रतिशत फिट हैं और अच्छी ट्रेनिंग कर रही हैं।' उन्होंने कहा, 'करीब डेढ़ महीने पहले मीराबाई ने जांघ में परेशानी की शिकायत की थी। इसलिये हमने तुरंत ही उसे अमेरिका भेजने की तैयारी कर दी।'

मीराबाई पूर्व भारोत्तोलक से फिजियोथेरेपिस्ट और 'स्ट्रेंथ एंड कंडिशनिंग' कोच बने होर्शिंग से 2020 से मार्गदर्शन ले रही हैं। महासंघ (आईडब्ल्यूएलएफ) 12 जुलाई से राष्ट्रमंडल सीनियर, जूनियर और युवा चैम्पियनशिप की मेजबानी के लिए तैयारी में जुटा है। फिर 28 जुलाई से इसी स्थल पर एशियाई युवा और जूनियर चैम्पियनशिप भी खेली जाएगी।

यादव ने कहा, 'हमें उसे (मीराबाई) को पेरिस ओलंपिक तक चोटों से मुक्त रखना होगा। उसे 49 किग्रा में कट में जगह बनाने के लिए अपना वजन कम करना होगा। और बार बार ऐसा करना उसके लिए अच्छा नहीं होगा इसलिए वह राष्ट्रमंडल चैम्पियनशिप में हिस्सा नहीं लेगी।' विश्व चैम्पियनशिप चार सितंबर से रियाध में शुरु होगी और एशियाई खेल 20 से कम दिन बाद चीन के हांगजोऊ में 23 सितंबर से खेले जाएंगे।

एशियाई खेल 2024 पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाइंग टूर्नामेंट नहीं है और इस मणिपुरी खिलाड़ी की ट्राफियों में सिर्फ एशियाड पदक की कमी है। वहीं 2024 ओलंपिक क्वालीफिकेशन नियम के अनुसार एक भारोत्तोलक का 2023 विश्व चैम्पियनशिप और 2024 विश्व कप में हिस्सा लेना अनिवार्य है। इसलिए वह विश्व चैम्पियनशिप से नहीं हट सकती। वहीं राष्ट्रमंडल खेलों के चैम्पियन जेरेमी लालरिनुगा को राष्ट्रीय शिविर से बाहर कर दिया गया क्योंकि इस भारोत्तोलक ने अपनी पीठ की चोट के रिहैबिलिटेशन के लिए अमेरिका जाने से इनकार कर दिया और साथ ही उन्होंने एशियाई खेलों और विश्व चैम्पियनशिप के लिए ट्रायल्स में भी हिस्सा नहीं लिया।

यादव ने कहा, 'जेरेमी जब चोटिल हुआ तो हमने उसे सेंट लुईस जाने के लिए कहा। हमने टॉप्स से भी बात की लेकिन उसने जाने से इनकार कर दिया।' उन्होंने कहा, 'वह प्रतिभाशाली खिलाड़ी है लेकिन उसने विश्व

चैम्पियनशिप और एशियाई खेलों के लिए ट्रायल्स नहीं दिया। इसलिये हमने उसे शिविर से बाहर कर दिया। उसे वापसी करने के लिये अच्छा प्रदर्शन करना होगा।' यादव ने साथ ही कहा, 'उसके कुछ अनुशासनात्मक मुद्दे भी रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'संकेत सरगर (राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता) भी चोटिल थे तो उन्हें भी शिविर से हटा दिया गया। उसका प्रदर्शन भी गिर रहा था। हाल के ट्रायल्स में जूनियर खिलाड़ियों ने उसे हरा दिया।'

हमारे खिलाड़ियों का क्रिकेट पर ध्यान है, ना कि पीसीबी के मामलों पर : बाबर आजम

कराची। कप्तान बाबर आजम ने गुरुवार को कहा कि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) में चल रह उठापटक का राष्ट्रीय टीम के आईसीसी वनडे विश्व कप और इससे पहले होने वाली सीरीज में खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। इस समय दुनिया के शीर्ष बल्लेबाजों में से एक बाबर ने एक प्रेस कांफ्रेंस में यह भी कहा कि उनकी टीम महज चिर प्रतिद्वंद्वी भारत के खिलाफ अहम मुकाबले पर ही ध्यान नहीं लगा रही है बल्कि पूरे विश्व कप में अच्छा प्रदर्शन करने की कोशिश करेगी।

गणेश चतुर्थी पर रिलीज होगी कंगना की चंद्रमुखी 2

2023 की बची छमाही में कंगना रनौट वापसी की तैयारियों में हैं। वे अपनी फिल्म इमरजेंसी में इंदिरा गांधी के साथ-साथ दर्शकों को चंद्रमुखी के रूप में भी दिखाई देंगी। अभिनेत्री कंगना ने चंद्रमुखी 2 की रिलीज डेट का ऐलान कर सभी को चौंका दिया। कंगना ने इंस्टाग्राम पर रिलीज की घोषणा के साथ राघव लॉरेंस का फर्स्ट-लुक पोस्टर शेयर किया। पोस्टर में, राघव लॉरेंस को एक इंटेंस लुक में देखा गया। वहां एक बड़े से दरवाजे के की होल से झांकते हुए नजर आए। चन्द्रमुखी-2 के पोस्टर को साझा करते हुए कंगना ने पुष्टि की कि चंद्रमुखी इस गणेश चतुर्थी पर रिलीज हो रही है। उन्होंने लिखा, इस सितंबर वह वापस आ रही है... क्या आप तैयार हैं चंद्रमुखी 2 फिल्म गणेश चतुर्थी पर रिलीज होने वाली है, जो 19 सितंबर को मनाई जाएगी। पी वासु निर्देशित, चंद्रमुखी 2 ब्लॉकबस्टर हिट तमिल हॉरर कॉमेडी फिल्म चंद्रमुखी की अगली कड़ी है, जिसमें रजनीकांत और ज्योतिका ने मुख्य भूमिका निभाई थी।

एक यूजर ने लिखा, क्विन फॉर ए रीजन। एक दूसरे यूजर ने लिखा, हे भगवान, मैं आपको देखने के लिए इंतजार नहीं कर सकता..ब्लॉकबस्टर लोड हो रहा है। एक फैन ने लिखा, बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं। एक इंटरनेट यूजर ने लिखा, हे भगवान, मैं ष्चंद्रमुखी2 के लिए बहुत उत्साहित हूं। एक अन्य इंटरनेट यूजर ने लिखा, देखने का इंतजार है। चंद्रमुखी 2 में कंगना, राजा के दरबार में एक नर्तकी की भूमिका निभाएंगी, जो अपनी सुंदरता और नृत्य कौशल के लिए जानी जाती थी। फिल्म में कंगना के साथ तमिल अभिनेता राघव लॉरेंस मुख्य भूमिका निभाएंगे। लाइका प्रोडक्शन और सुबास्करण की निर्मित यह फिल्म सितंबर में तमिल, तेलुगु, हिंदी, मलयालम और कन्नड़ में रिलीज होगी।

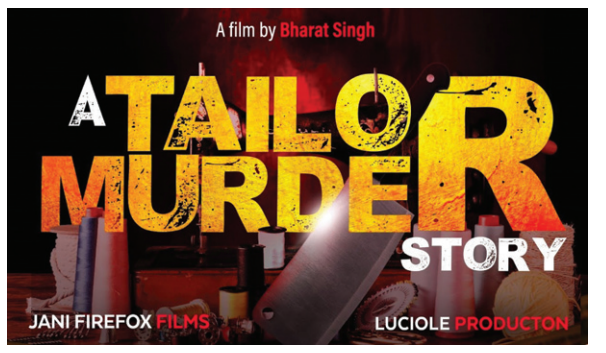

ए टेलर मर्डर स्टोरी का टीजर आउट: नवंबर में रिलीज होगी फिल्म

कन्हैया लाल एक दर्जी थे, जिनकी 2022 में उदयपुर में दिनदहाड़े हत्या की गई थी। इस भयानक घटना ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था, क्योंकि दो लोग, ग्राहक बनकर, उनकी दुकान में घुसे और उनका सिर काट दिया। घटना के करीब एक साल बाद कन्हैया हत्याकांड पर आधारित फिल्म बन रही है। भरत सिंह द्वारा निर्देशित, इसका नाम ए टेलर मर्डर स्टोरी है।फिल्म का इंटेंस टीजर भी सोशल मीडिया पर आ चुका है। कन्हैया लाल की दो लोगों ने हत्या कर दी और उसका सिर काट दिया। बाद में, उन्होंने नूपुर शर्मा के समर्थन में एक सोशल मीडिया पोस्ट पर उस व्यक्ति की हत्या करने की बात स्वीकार करते हुए एक वीडियो रिकॉर्ड किया। नूपुर शर्मा पिछले साल पैगंबर मोहम्मद के बारे में अपने विवादित बयानों को लेकर चर्चा में थीं। घटना पर अब भरत सिंह द्वारा जानी फायरफॉक्स फिल्म्स और लूसिओल प्रोडक्शन के तहत एक फीचर फिल्म बनाई जा रही है। आगामी फिल्म का टीज़र भी ऑनलाइन साझा किया गया था और इसमें हत्या के भयानक विवरण का खुलासा किया गया है। कन्हैया की पत्नी और बेटे ने प्रोड्यूसर अमित जानी को एनओसी (अनापत्ति प्रमाण पत्र) दे दी है। आगामी फिल्म ए टेलर मर्डर स्टोरी लगभग 25 करोड़ रुपये से 30 करोड़ रुपये के बजट पर बनाई जाएगी। यह इसी साल नवंबर में रिलीज होगी। कन्हैया लाल तेली एक हिंदू दर्जी थे जिनकी 28 जून 2022 को राजस्थान के उदयपुर में दो मुस्लिम हमलावरों ने हत्या कर दी थी।

सुनील शेट्टी नहीं चाहते कि उनके बच्चे भारतीय स्कूल में पढ़ें

एक्टर सुनील शेट्टी ने कहा है कि वे अपने बच्चों को भारतीय स्कूल में नहीं पढ़ाना चाहते थे। एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि उन्हें ये अच्छी तरह से पता था कि अमेरिका के स्कूल में बच्चों को पढ़ाने के लिए काफी खर्च करना पड़ेगा और ये बातें उनके पिताजी भी उनसे अक्सर कहा करते थे। सुनील शेट्टी ने ये भी बताया कि कैसे बेटी आथिया ने अटलांटा के कॉलेज में एडमिशन के बाद फिल्मों में जाने का फैसला सुनाया। उन्होंने बताया कि इंडस्ट्री में अपने शुरुआती दिनों में बहुत अ?धिक स्ट्रगल किया है। शुरुआत में क्रिटिक्स से उन्हें काफी आलोचनाएं भी झेलनी पड़ी थी। इन चीजों से केवल वही नहीं बल्कि उनकी फैमिली पर भी असर पड़ रहा था। उन्होंने कहा कि मैंने ये पहले से ही तय कर लिया था कि मैं अपने बच्चों को भारतीय स्कूल में नहीं पढ़ाउंगा। मैं अपने बच्चों को अमेरिकन बोर्ड के स्कूल में पढ़ाना चाहता था। मैं ऐसी फैकल्टी चाहता था जो कि अमेरिकन हो। इसके पीछे वजह ये है कि मैं नहीं चाहता था कि मेरे बच्चों को स्पेशल फील कराया जाए कि वो सिलेब्रिटी के बच्चे हैं या उन्हें बताया जाए कि वे किसके बच्चे हैं। मैं उन्हें एक ऐसी दुनिया में जाने देना चाहता था जहां इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कौन हैं। मुझे लगता है कि ये काम कर गया। मुझे याद है मेरे पिताजी मुझसे कहते थे कि इसके लिए बहुत पैसे खर्च करने होंगे।

उन्होंने बेटी आथिया के बारे में बातें करते हुए उन्होंने कहा, हम आथिया को लेकर एडमिशन के लिए अटलांटा गए और वहां उन्होंने कॉलेज देखा। सब कुछ हो गया और उन्हें पसंद भी आया। उनका एडमिशन हो गया और जब हम वापस आ रहे थे, तब उसने मुझसे एयरपोर्ट पर कहा- पापा, मैं ये करके खुश नहीं हूं। फिर मैंने उससे पूछा कि फिर आपको क्या करना है। इस पर आथिया ने मुझसे कहा- मैं फिल्मों में काम करना चाहती हूं। मैंने कहा कि ये अच्छी बात है लेकिन क्या अपनी असफलताओं को स्वीकार कर पाओगे? क्योंकि ये बहुत स्ट्रेसफुल होता है। गौरतलब है ?कि सुनील शेट्टी ने साल 1992 में आई फिल्म बलवान से डेब्यू किया था। हालांकि, उन्हें पॉप्युलैरिटी मिली साल 1994 में आई फिल्म मोहरा से। उसी साल आई उनकी गोपी किशन भी दर्शकों को काफी पसंद आई थी।

गदर 2 में नाना पाटेकर की आवाज

बालीवुड एक्टर सनी देओल की फिल्म गदर- एक प्रेम कथा के बाद गदर 2 जल्द पूरी होने वाली हैं। बताया जा रहा है कि फिल्म अगस्त में रिलीज होने वाली है। इस फिल्म के लिए अनुभवी अभिनेता नाना पाटेकर ने वॉयसओवर किया है। पहली फिल्म में, ओम पुरी ने प्रारंभिक दृश्यों के लिए वॉयस ओवर किया था। अब फिल्म में नाना पाटेकर का वॉयस ओवर फिल्म की शुरुआत में ही सुनाई देगा। निर्देशक-निर्माता अनिल शर्मा द्वारा निर्देशित और ज़ी स्टूडियोज द्वारा निर्मित इस फिल्म में सनी देओल और अमीषा पटेल के साथ अनिल शर्मा के पुत्र उत्कर्ष शर्मा मुख्य भूमिका में हैं। यह फिल्म 11 अगस्त 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। गदर 2 संकेत देता है कि कहानी वहीं से शुरू होती है जहां कहानी गदर- एक प्रेम कथा में समाप्त हुई थी। पहली फिल्म तारा सिंह और सकीना की प्रेम कहानी पर आधारित थी, जिसने दर्शकों के दिलों पर अमिट छाप छोड़ी और अब भी जारी है।

फिल्म द क्रू का मार्च 2024 में होगा प्रदर्शन

फिल्म निर्माता जोड़ी, एकता आर कपूर और रिया कपूर ने अपनी आगामी बहुप्रतीक्षित फिल्म, द क्रू के लिए 22 मार्च, 2024 की लंबे समय से प्रतीक्षित रिलीज की तारीख का खुलासा किया। फिल्म में करीना कपूर खान, तब्बू और कृति सनोन मुख्य भूमिकाओं में हैं।फिल्म की घोषणा के बाद से, प्रशंसक इस परियोजना का नेतृत्व करने वाली सभी महिला कलाकारों को देखने के लिए बेहद उत्साहित हैं। यह उनकी सफल फिल्म वीरे दी वेडिंग के बाद एकता आर कपूर और रिया कपूर के बीच सहयोग का भी प्रतीक है। फिल्म में दिलजीत दोसांझ और कपिल शर्मा भी हैं। द क्रू एकता कपूर और रिया कपूर की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक है। इसकी शूटिंग मुंबई और अबू धाबी में की गई थी। राजेश कृष्णन द्वारा निर्देशित, द क्रू बालाजी टेलीफिल्म्स और अनिल कपूर फिल्म्स कम्युनिकेशन नेटवर्क के लिए 22 मार्च, 2024 को एक बड़ी रिलीज होगी।

काजोल को काम करने के लिए सास ने किया प्रेरित, बेटी नीसा के जन्म के बाद बनाया शेड्यूल

बॉलीवुड एक्ट्रेस काजोल ने बताया है कि उनकी सास उन पहले लोगों में से एक थीं, जिन्होंने उन्हें अपनी बेटी नीसा के जन्म के बाद काम करना शुरू करने के लिए कहा था। एक्ट्रेस ने कहा कि उनके पास एक मजबूत सपोर्ट सिस्टम है, जो उन्हें अपने काम में एक्सीलेंस हासिल करने के लिए प्रेरित करती है। काजोल जल्द ही अपकमिंग स्ट्रीमिंग सीरीज द ट्रायल - प्यार, कानून, धोखा में एक वकील नोयोनिका की भूमिका निभाती नजर आएंगी। एक्ट्रेस काजोल ने कहा कि मेरे पास सबसे अद्भुत परिवार है, जो मेरा सपोर्ट करता है। वास्तव में, मेरी सास उन पहले लोगों में से एक थीं जिन्होंने मुझसे कहा कि नीसा के जन्म के बाद मुझे काम करना शुरू कर देना चाहिए। उन्होंने कहा, उसकी चिंता मत करो और हम तुम्हारे लिए हैं। मेरे पति अपना शेड्यूल मेरे अनुसार तैयार करते हैं। इसलिए, अगर मुझे कोई आउटडोर शूट करना है, तो वह सुनिश्चित करते थे कि उनके पास कोई शूट न हो और इसके विपरीत, आप जानते हैं कि हम एक-दूसरे के लिए ऐसा करते हैं। काम और परिवार के बीच एक हेल्दी बैलेंस बनाना इन दिनों एक जरूरी स्किल है। सीरीज में, नोयोनिका अपने सपने का पीछा करती है और अपने बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम बिताती है और काम को मैनेज करती है।

उन्होंने आगे कहा कि जहां तक काम करने और अपने बच्चों से दूर समय बिताने का सवाल है, मेरी मां हमेशा इस बात पर जोर देती थीं कि क्वालिटी हमेशा क्वांटिटी से अधिक महत्वपूर्ण होती है। भले ही आप दिन में 10 मिनट भी बिताते हैं, वह समय अपने बच्चों के साथ बिना किसी ध्यान भटकाए, बिना हाथ में फोन या टीवी चालू किए, बस आप टाइम बिताए। मुझे लगता है कि एक माता-पिता के रूप में यह सबसे अच्छी बात है जो मैं कर सकती हूं। शो में शीबा चड्ढा, जिशु सेनगुप्ता, एली खान, कुब्रा सैत और गौरव पांडे भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। बनिजय एशिया द्वारा निर्मित द ट्रायल-प्यार, कानून, धोखा का सुपर्ण एस. वर्मा ने निर्देशन किय है।